

Springboard
ACADEMY
AN INSTITUTE FOR IAS & RAS

RAS PRELIMS

2024 - 2025

**मध्यकालीन
भारत का इतिहास
प्रारम्भिक परीक्षा**



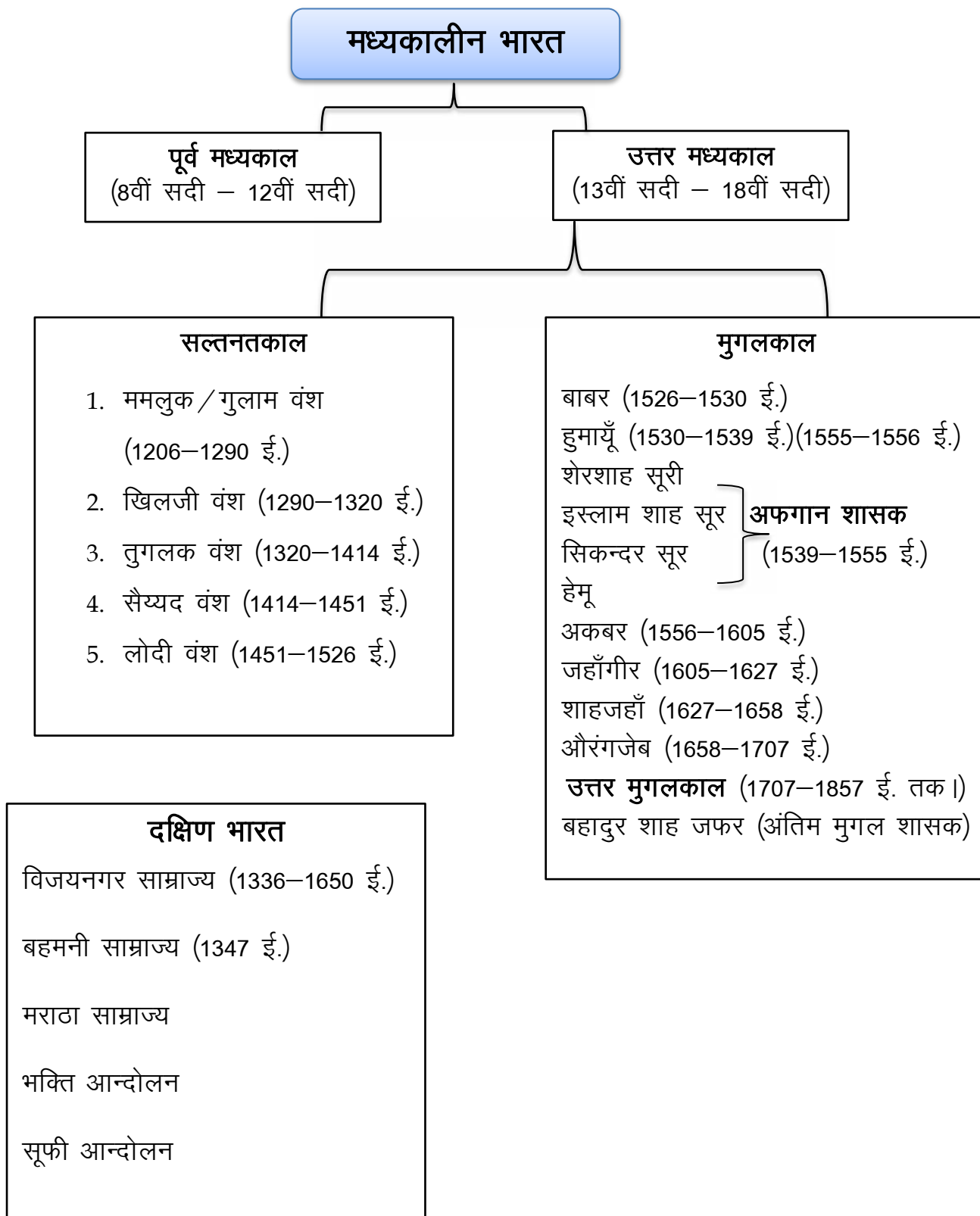
सूर्यभान सर

पाठ्यक्रम

- ☑ सल्तनतकाल : प्रमुख सल्तनत शासकों की उपलब्धियाँ।
विजयनगर की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ।
- ☑ मुगलकाल : राजनीतिक चुनौतियाँ एवं सुलह— अफगान, राजपूत, दक्कनी राज्य और मराठा।
- ☑ मध्यकाल में कला एवं वास्तु, चित्रकला एवं संगीत का विकास।
- ☑ भक्ति तथा सूफी आंदोलन का धार्मिक एवं साहित्यिक योगदान।

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	सल्तनतकाल	1–31
2.	विजयनगर साम्राज्य की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ	32–37
3.	मुगलकाल	38–72
4.	सूफी आन्दोलन	73–77
5.	भक्ति आन्दोलन	78–83



☑ भारत पर मुस्लिम आक्रमणों का क्रम –

1. अरब
2. तुर्क
3. अफगान

अरब आक्रमण

- स्थान – सिंध
- समय – 712 ई.
- प्रथम अरब आक्रमणकारी – मोहम्मद बिन कासिम।
- ☼ रावर का युद्ध – 712 ई.
 - मुहम्मद बिन कासिम व दाहिर (सिंध का शासक) के मध्य हुआ।
 - दाहिर पराजित हुआ एवं लड़ते हुए मारा गया।
- ☼ आक्रमण के प्रभाव –
 1. व्यापार वाणिज्य में वृद्धि हुई।
 2. सिंध में इस्लाम का प्रचार-प्रसार हुआ।
 3. अरबी भाषा ने स्थानीय भाषा को प्रभावित किया जैसे – सिंधी
 4. साहित्य –
 - 'चचनामा' नामक पुस्तक की रचना की गई।
 - ✓ भाषा – अरबी
 - ✓ इसमें सिंध का इतिहास मिलता है।
 - ✓ इस आक्रमण की जानकारी 'चचनामा' से मिलती है।
 - ✓ 'चच' दाहिर के पिता का नाम था।
 - पंचतंत्र का अरबी में अनुवाद किया गया एवं उसका नाम 'कलीला वा दीमना' रखा गया।
 - पंचसिद्धांतिका, सूर्यसिद्धांतिका, चरक संहिता आदि का अरबी में अनुवाद हुआ।
 - ✓ इससे भारतीय खगोलशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, गणित, चिकित्सा आदि का ज्ञान अरबों तक पहुँचा।
 - ब्रह्म गुप्त की पुस्तकों का अरबी में अनुवाद किया गया।
 - ✓ ब्रह्म स्फुट सिद्धांत – अल सिंध हिंद
 - ✓ खण्डन खाद्य – अल अरकन्द
 - अरबों ने भारतीय दशमलव पद्धति ग्रहण की। इसे अरब देशों में हिन्दसा कहा जाता है।
 5. अरबों ने कई नगरों की स्थापना की जैसे – महफूजा
 6. शिक्षा के केंद्रों की स्थापना की जैसे –
 - ✓ मकतब – प्राथमिक शिक्षा केंद्र
 - ✓ मदरसा – उच्च शिक्षण संस्थान

7. जजिया नामक एक नया कर लगाया गया।

- जजिया – गैर मुसलमानों से लिया जाना वाला गैर-धार्मिक/राजनीतिक कर

तुर्क आक्रमण

- तुर्क मध्य एशियाई बर्बर जाति थी।
- तुर्कों ने 'गाजी' उपाधि को प्रसिद्ध किया। (गाजी – धर्म योद्धा/रक्षक)
- ☑ **अलप्तगीन** – तुर्क साम्राज्य का संस्थापक।
- ☑ **सुबुक्तगीन** –
 - भारत पर आक्रमण करने वाला प्रथम तुर्क।
 - सुबुक्तगीन ने हिन्दूशाही वंश के शासक जयपाल को पराजित किया।
- ☑ **महमूद गजनवी** –
 - इसने सीस्तान के शासक खलफ-बिन-अहमद को पराजित किया।
 - खलीफा ने इसे सुल्तान की उपाधि प्रदान की।
 - यह प्रथम मुसलमान था जिसने सुल्तान की उपाधि धारण की।
 - सुल्तान – खलीफा का प्रतिनिधि।
 - उपाधि – बुतशिकन (मूर्तिभंजक)
 - खलीफा के समक्ष हिन्दुस्तान पर प्रतिवर्ष आक्रमण करने का प्रण लिया।
 - इसने भारत पर 17 आक्रमण किए।
 - **1000 ई.** को वैहिन्द पर आक्रमण कर जयपाल को पराजित किया, और जयपाल ने आत्महत्या कर ली।
 - **1004 ई.** को मुल्तान (लाहौर)
 - **1009 ई.** नारायणपुर (अलवर)
 - **1014 ई.** थानेश्वर (हरियाणा)
 - **1016 ई.** कश्मीर (असफल आक्रमण)
 - **1018–1019 ई.** कन्नौज व मथुरा।
 - **1025 ई.** प्रभास पट्टन (सोमनाथ) –
 - सबसे सफल आक्रमण।
 - वापस लौटते समय कच्छ व सिंध का रास्ता लिया
 - इस आक्रमण के समय गुजरात का शासक भीम प्रथम था।
 - **1027 ई.** जाटों के विरुद्ध अभियान। (अंतिम अभियान)

- 1030 ई. गजनवी की मृत्यु।
- दरबारी विद्वान –
 1. उत्बी – किताब-उल-यामिनी (तारीख-ए-सुबुक्तगीन)
 2. वैहाकी – तारीख-ए-मसुदी
 - इतिहासकार लेनपून ने वैहाकी को 'पूर्व का पेप्स' कहा है।
 3. फिरदौसी – शाहनामा (ईरान का राष्ट्रीय ग्रंथ)
 4. अल बिरुनी – तहकीक-ए-हिन्द/किताब उल हिन्द (भारत के बारे में बताने वाला पहला स्रोत)
 - ख्वारिज्म का निवासी था।
 - इसे फारसी, अरबी व तुर्की भाषाओं का ज्ञान था।
 - इसे दर्शनशास्त्र, खगोलशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, इतिहास, राजनीति एवं विज्ञान का ज्ञान था।
 - कन्नौज आक्रमण के समय भारत आया।
 - 1016 ई. गजनवी ने ख्वारिज्मी पर आक्रमण किया व इसे युद्ध बन्दी बनाया व कालान्तर में गजनवी ने इसे अपना दरबारी विद्वान बनाया।
 - भारत में ज्योतिष व संस्कृत का ज्ञान प्राप्त किया। (बनारस में)
 - अपनी पुस्तक में सती प्रथा, वर्ण व्यवस्था व जाति प्रथा का वर्णन करता है।
 - भारतीयों को विद्वान बताता है, परन्तु उन्हें **कूप मंडूक** बताया।
 - अलबिरुनी लिखता है, कि आर्यभट्ट के अनुयायी पृथ्वी को गोल मानते हैं।
 - इसने युक्लिड की ज्यामिति का संस्कृत अनुवाद किया।

☑ मोहम्मद गौरी –

- राजधानी – गजनी
- अन्य नाम – मोहम्मद बिन साम
- इसका सम्बन्ध गौर प्रांत से था, इसलिए गौरी कहलाया।
- गजनवी से इसका कोई संबंध नहीं था।

★ गौरी के अभियान –

- 1175 AD – मुल्तान अभियान
- 1178 AD – गुजरात अभियान
 - शासक – भीम-2/मूल-2 (चालुक्य शासक)
 - इसकी माँ नायिका देवी इसकी संरक्षिका थी।
 - नायिका देवी ने गौरी को बुरी तरह पराजित किया।
 - गुजरात/भीम-2 की राजधानी – अन्हिलपाटन
- 1191 AD – तराइन का प्रथम युद्ध ⇒ पृथ्वीराज चौहान v/s गौरी (पराजित)

- **1192 AD –**
 - तराइन का द्वितीय युद्ध $\Rightarrow$ पृथ्वीराज चौहान v/s गौरी (जीत)
 - युद्ध का कारण $\Rightarrow$ तबरहिन्द (भटिण्डा) पर अधिकार को लेकर।
 - इस समय दिल्ली का शासक $\Rightarrow$ गोविन्द-3 था।
 - पृथ्वीराज चौहान युद्ध में लड़ते हुए मारा गया।
- **1192 AD – चन्दावर का युद्ध**
 - जयचन्द गहड़वाल (कन्नौज) v/s गौरी (जीत गया)
- गौरी ने अपने सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक को विजित क्षेत्रों का गवर्नर नियुक्त किया एवं स्वयं गजनी चला गया।
- **1205 AD –**
 - खोखरों के विरुद्ध अभियान हेतु दूसरी बार भारत आया।
 - युद्ध में गौरी घायल हो गया और 1206 AD में मृत्यु हो गई।
- गौरी की मृत्यु के पश्चात् उसके गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक ने भारत में एक नए राजवंश की नींव डाली, जिसे गुलाम वंश कहा जाता है।
- **1206 AD –** में दिल्ली सल्तनत की शुरुआत हुई।
- गौरी ने 'मोहम्मद बिन साम' नाम के सिक्के चलाये जिन्हें देहलीवाल सिक्के कहा जाता था।
- सिक्कों पर देवी लक्ष्मी का चित्र मिलता है तथा देवनागरी लिपि में अंकन किया हुआ है।
- ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती 1192 AD में गौरी के साथ भारत आये एवं अजमेर बस गये।

सल्तनत काल

☑ ममलुक वंश/गुलाम वंश – (1206–1290 AD)

☐ कुतुबुद्दीन ऐबक – (1206–1210 AD)

- ऐबक का शाब्दिक अर्थ – चन्द्रमा का स्वामी।
- उपाधियाँ – 1. कुरान खाँ 2. लाख बख्श 3. हातिम-2

नोट:- इसने लाहौर को अपनी राजधानी बनाया।

- इसने सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की।
- इसने अपने नाम के सिक्के नहीं चलवाये
- इसने अपने नाम का खुत्बा नहीं पढ़वाया।
- इसने अपने विरोधियों के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किये।
 - सिंध - नासिरुद्दीन कुबाचा
 - गजनी - ताजुद्दीन यल्दोजी
 - लाहौर - ऐबक
- 1208AD में गौरी के उत्तराधिकारी गयासुद्दीन ने इसे दसता से मुक्त किया।
- 1210AD में लाहौर में ऐबक की चौगान (POLO) खेलते हुए मृत्यु हो गई।

नोट – 1. भारत में सर्वप्रथम मोहम्मद गौरी ने 'इक्ता प्रथा' चलाई थी, किन्तु इल्तुतमिश ने इसे संस्थागत रूप प्रदान किया।

2. ऐतिहासिक दृष्टि से दिल्ली के संस्थापक अनंगपाल तोमर (11वीं सदी) को माना जाता है।

☑ आरामशाह (1210–11AD) – कुतुबुद्दीन ऐबक का उत्तराधिकारी बना।

☑ इल्तुतमिश (1211–36AD) – यह इल्बरी तुर्क था। (प्रथम इल्बरी शासक)

- यह बदायूँ (उत्तर प्रदेश) का गवर्नर था।
- यह ऐबक का दामाद व गुलाम था।
- इसने तुर्कान-ए-चहलगानी का गठन किया। इसे 'चालीसा दल' भी कहा जाता है।
 - 'चालीसा दल' – तुर्क गुलामों का समूह
- दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया।
- दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक था।
- 'इक्ता व्यवस्था' (काम के बदले भूमि देना) को आरंभ किया। इक्ता भूमि अनुदान नहीं बल्कि भू-राजस्व का अनुदान होता था।

- समय-समय पर इक्तादारों का स्थानान्तरण होता रहता था।
- इक्ता प्राप्त करने वाले को **इक्तादार, मुक्ता या वली** कहते थे।
- अरबी पद्धति में दो सिक्के चलाये –
 - चाँदी का – टंका
 - ताँबे का – जीतल
- **1216 AD – तराइन का तृतीय युद्ध**
 - इल्तुतमिश v/s ताजुद्दीन यल्दोजी (पराजित किया)
 - इसने कुबाचा को कई बार पराजित किया। कुबाचा सिंधु नदी में डूबकर मर गया।
- **1221 AD –**
 - जलालुद्दीन मंगबरनी का पीछा चंगेज खाँ कर रहा था।
 - इल्तुतमिश ने मंगबरनी की कोई सहायता नहीं की।
 - उसने अपने साम्राज्य को मंगोल आक्रमण से बचा लिया।
 - मंगबरनी सिंध की तरफ चला गया।
 - चंगेज खाँ दिल्ली सल्तनत की सरहद तक आया था।
- **1229 AD –**
 - खलीफा से 'सुल्तान' की उपाधि धारण की।
 - भारत का पहला शासक जिसने सुल्तान की उपाधि धारण की।
 - अपने पुत्र नासिरुद्दीन को उत्तराधिकारी घोषित किया।
 - नासिरुद्दीन की बंगाल में लड़ते हुए मृत्यु हो गई।
 - इसने अपनी बेटी रजिया को उत्तराधिकारी घोषित किया।
 - ग्वालियर अभियान के समय रजिया के नाम के सिक्के चलाये गये।
 - ग्वालियर अभियान के समय बलबन को खरीदा।
 - **1236 AD – इल्तुतमिश की मृत्यु।**
 - सुल्तान – खलीफा का प्रतिनिधि
 - बादशाह – स्वयंभू एवं स्वतंत्र शासक

☑ **रुकुनुद्दीन फिरोज (1236 AD) –**

- यह आलसी प्रवृत्ति का था। (आयोग्य शासक)
- वास्तविक शक्तियाँ इसकी माँ शाह तुर्कान के पास थी।
- शाह तुर्कान निरकुंश थी।
- अमीर – शाह तुर्कान के नियंत्रण में थे।
- शाह तुर्कान अमीरों को खुश करने के लिए महंगे उपहार देती थी।
- रजिया लाल वस्त्र पहनकर जुम्मे की नमाज में गयी, तथा जनता से न्याय की माँग की।
- लाल रंग – न्याय का प्रतीक।

- रजिया जनता के समर्थन से शासिका बनी।

☑ **रजिया सुल्तान (1236–1240 AD) –**

- रजिया कूबा (Coat) व कुलाह (Long Coat) पहनकर दरबार में आती थी।
- वह सिंहासन का प्रयोग करती थी।
- रजिया शिकार, तीरंदाजी, घुड़सवारी आदि करती थी।
- रजिया ने कुछ पद अपने नजदीकी लोगों को प्रदान किये।
 - I. कबीर खाँ – लाहौर का गवर्नर (इसने रजिया के विरुद्ध प्रथम विद्रोह किया।
 - II. अल्तूनिया – तबरहिन्द का गवर्नर
 - III. एतगीन – अमीर-ए-हाजिब
 - IV. याकूत (अफ्रीका निवासी) – अमीर-ए-आखुर
- कुछ इतिहासकारों के अनुसार रजिया के साथ याकूत का प्रेम संबंध था।
- अल्तूनिया – इसने तबरहिन्द में विद्रोह किया। रजिया इस विद्रोह का दमन करने गई, लेकिन पराजित हो गई।
- रजिया ने अल्तूनिया से विवाह किया एवं साथ मिलकर दिल्ली पर आक्रमण किया और पराजित हुई।
- कैथल नामक स्थान पर डाकुओं ने रजिया की हत्या कर दी।

☞ **रजिया की असफलता के कारण –**

- ✓ अमीरों की महत्वकांक्षाएँ (Real Cause)
- ✓ दिल्ली छोड़ना।
- ✓ 'मिनहास-उस-सिराज' की तबकात-ए-नासिरी' के अनुसार रजिया का महिला होना ही, उसकी असफलता का कारण था।
- ✓ अमीरों ने बहरामशाह को सुल्तान बना दिया।

☑ **बहरामशाह (1240–1242 AD)**

- "नायब-ए-मुमलिकात" नामक पद का सृजन किया।
- एतगीन को प्रथम नायब-ए-मुमलिकात नियुक्त किया गया।

☑ **अलाउद्दीन मसूदशाह (1242–1246 AD)**

- इसके समय 'अमीर-ए-हाजिब' बलबन था।
- बलबन ने नासिरुद्दीन महमूद को गद्दी पर बैठाया।

☑ **नासिरुद्दीन महमूद (1246–1266 AD) –**

- बलबन की सहायता से सुल्तान बना।
- बलबन का दामाद था।
- धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति था।
- कुरान की प्रतिलिपियाँ लिखता था।

- बलबन को नायब-ए-मुमलिकात नियुक्त किया।
- बलबन को हॉसी (हरियाणा) का गर्वनर नियुक्त किया।
- बलबन को 'उलुग खाँ' को उपाधि प्रदान की।

☑ **बलबन (1266–1286 AD) –**

- यह इल्बरी तुर्क था।
- यह इल्तुतमिश का गुलाम एवं चालीसा दल का सदस्य था।
- विभिन्न सुल्तानों के समय बलबन के पद –
 - रजिया सुल्ताना – अमीर-ए-शिकार
 - बहरामशाह – अमीर-ए-आखुर
 - अलाउद्दीन मसूदशाह – अमीर-ए-हाजिब
 - नासिरुद्दीन महमूद – नायब-ए-मुमलिकात

★ **राजत्व का दैवीय सिद्धान्त –**

- जिल्ल-ए-इलाही = ईश्वर की छाया
- नियाबत-ए-खुदाई = ईश्वर का प्रतिनिधि
- यह रक्त की शुद्धता में विश्वास रखता था। (कुलीनता)
- इसका संबंध ईरान के आफरशियाब वंश से था।
- फिरदौसी के शाहनामा में आफरशियाब वंश की जानकारी मिलती है।
- इसने ईरानी रीति-रिवाज आरम्भ किये।

सुल्तान इस संसार में ईश्वर का प्रतिनिधि है, एवं पैगम्बर के बाद सुल्तान का स्थान है।

1. सिजदा – सुल्तान के आगे घुटने टेकना।
2. पैबोस/पायबोस – सुल्तान के पैर के अंगूठे को चूमना।
3. नोरोज – नववर्ष
4. तुलादान
5. ताजिया

- इसने अपने दरबार को भव्य रूप से सजाया।
- इसने अप्रीकी अंगरक्षकों को नियुक्त किया।
- अपने बच्चों के ईरानी नाम रखे – कैकूबाद, कैखुसरो, क्यूमर्श
- ये लौह एवं रक्त की नीति में विश्वास रखता था।
- इसने चालीसा दल का दमन किया।
- अमीर बकबक को सजा दी।
- तुगरिल खाँ ने बंगाल में इसके विरुद्ध विद्रोह किया।
- बलबन ने अमीन खाँ को मृत्युदण्ड दिया, क्योंकि वह तुगरिल खाँ के विद्रोह का दमन करने में असफल रहा।

- मलिक मुल्कदीर ने तुगरिल के विद्रोह का दमन किया।
- बलबन ने मलिक मुल्कदीर को तुगरिलकुश की उपाधि दी।
- इसने मेवात व कटेहर विद्रोह का बड़ी क्रूरता से दमन किया।
- इसने दो विभागों का गठन किया – दीवान-ए-अर्ज = सैन्य विभाग
दीवान-ए-बरीद = गुप्तचर विभाग
- इसने अपने पुत्र महमूद को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया।
- महमूद मंगोलो से लड़ता हुआ मारा गया। इसे शहीद का दर्जा दिया गया।
- महमूद ने ही सबसे पहले अमीर खुसरो को संरक्षण दिया।
- बलबन ने कैखुसरो को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया।
- उसके पुत्र बुगरा खाँ ने उत्तराधिकारी बनने से मना कर दिया।
- अमीरों ने कैखुसरो को मुल्तान का गवर्नर व कैकुबाद को सुल्तान बनाया।

नोट- बलबन ने मंगोल शासक हलाकू खाँ से सन्धि की।

☑ **कैकुबाद (1286–1290AD) –**

- यह शराबी था तथा लकवाग्रस्त था।
- अमीरों ने क्यूमर्श को बादशाह बना दिया।

☑ **क्यूमर्श (1290AD) –**

- इसका संरक्षक जलालुद्दीन खिलजी था।
- जलालुद्दीन ने इसकी हत्या करवा दी।
- इतिहास में यह घटना 'खिलजी क्रांति' के नाम से जानी जाती है।

खिलजी वंश (1290–1320AD)

- खिलजी मूलतः तुर्क थे, लेकिन इनके पूर्वज अफगानिस्तान में बस गए।
- इन्होंने अफगानी रीति-रिवाजों तथा संस्कृति को अपनाया।
- इतिहासकारों के अनुसार यह खिलजी क्रान्ति थी, क्योंकि –
 1. तुर्क श्रेष्ठता की मनोवृत्ति को आघात लगा।
 2. खिलजी शासकों ने साम्राज्यवादी नीति को अपनाया।
 3. इन्होंने धर्म को राजनीति से पृथक् किया।
 4. सांस्कृतिक योगदान व आर्थिक सुधार।

☑ जलालुद्दीन खिलजी (1290–1296 AD) –

- एक वर्ष तक किलोखरी को अपना केन्द्र बनाया।
- इसने बलबन के सिंहासन का प्रयोग नहीं किया।
- इसने मलिक छज्जू के विद्रोह को माफ कर दिया। (बलबन का भतीजा)
- रणथम्भौर पर असफल आक्रमण किया। (1291 AD)
- इसने सूफी संत सिद्दी मौला को मृत्यु दण्ड दिया।
- दिल्ली के ठगों और चोरों को दावत दी एवं उन्हें दिल्ली से बाहर भेजा।
- इसने 'दीवान-ए-वकूफ' (व्यय विभाग) की स्थापना की।
- मंगोल नेता अब्दुल्ला ने दिल्ली पर आक्रमण किया, जलालुद्दीन खिलजी ने उसे पराजित कर दिया।
- मंगोल नेता उलुग खाँ दिल्ली में बस गया। (मंगोलपुरी)
- इन्हें नवीन मुसलमान कहा जाता है।
- इसके भतीजे अलाउद्दीन खिलजी ने दक्षिण भारत में देवगिरी पर आक्रमण किया।

(दक्षिण भारत पर दिल्ली सल्तनत काल का प्रथम आक्रमण)

- अलाउद्दीन खिलजी ने जलालुद्दीन खिलजी की हत्या कर दी। (1296 AD)
- रणथम्भौर अभियान के समय जलालुद्दीन खिलजी ने कहा था कि –

“मैं ऐसे 100 किलों को मुसलमान के एक बाल के बराबर नहीं समझता”।

☑ अलाउद्दीन खिलजी (1296–1316 AD) –

- बचपन का नाम – अली गुरशासप
- पालन-पोषण ⇒ जलालुद्दीन खिलजी ने (चाचा)
- यह कड़ा व माणिकपुर का सूबेदार था।
- दिल्ली प्रवेश के समय इसने जनता में धन बाँटा।
- यह सदैव अपने मित्र 'अला-उल-मुल्क' के सुझावों पर विशेष ध्यान देता था।

- इसके दो सपने थे – 1. विश्व विजय – सिकन्दर सानी की उपाधि धारण की।
2. नया धर्म चलाना
- इसने धर्म को राजनीति से अलग किया।
- काजी मुंगीस के साथ इसका संवाद काफी प्रसिद्ध है।
- इसके समय 4 विद्रोह हुए –
 1. नवीन मुसलमानों का विद्रोह
 2. मंगू खाँ का विद्रोह
 3. अक्त खाँ का विद्रोह
 4. हाजी मौला का विद्रोह

☞ **विद्रोह रोकने हेतु अलाउद्दीन खिलजी के उपाय –**

1. अमीरों के अतिरिक्त आय के स्रोतों को समाप्त किया।
2. शराब की गोष्ठियों पर प्रतिबंध लगाया।
3. अमीरों के वैवाहिक संबंध सुल्तान की सहमति से ही सम्भव थे।
4. गुप्तचर व्यवस्था को दुरुस्त किया।

★ **अभियान –**

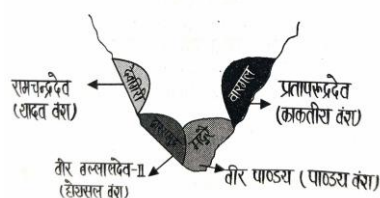
A) गुजरात अभियान–1299 AD

- यहां का शासक कर्ण बघेल था।
- कर्ण बघेल व देवलरानी (पुत्री) देवगिरी चले गये।
- कर्ण बघेल की पत्नी कमला देवी ने खिलजी से विवाह किया।
- इस अभियान में काफूर को हजार दीनार में खरीदा।

1299AD	→1301 AD	→ 1303 AD	→1305 AD	→1308AD	→1311AD
जैसलमेर	रणथम्भौर	चित्तौड़गढ़	मालवा	सिवाणा	जालौर

नोट:— अलाउद्दीन खिलजी ने दक्षिण भारत के राज्यों का विलय करने के बजाय अधीनता स्वीकार करवाई व धन लूटा, उसकी यह नीति समुद्रगुप्त की नीति के समान थी।

★ **दक्षिण भारत के अभियान –** दक्षिण भारत के अभियानों का नेतृत्व मलिक काफूर ने किया।

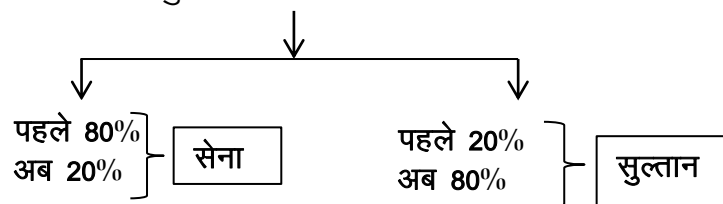


- प्रतापरुद्रदेव ने मलिक काफूर को कोहिनूर का हीरा दिया।
- मद्रास अभियान सबसे सफल अभियान था। (सर्वाधिक लूट मिली)

- वीर पाण्डय ने अधीनता स्वीकार नहीं की।
- सुन्दर पाण्डय ने अधीनता स्वीकार नहीं की। – बड़ी मात्रा में धन प्राप्त हुआ।

• सैनिक सुधार–

- नियमित सेना गठन किया।
- सेना को नियमित वेतन देना आरंभ किया।
- खुम्स में उनकी हिस्सेदारी को कम किया।



- सैनिकों का हुलिया लिखवाना आरम्भ किया।
- घोड़ों को दागना प्रारम्भ किया।
- राजस्व सुधार –
 - इसने भूमि की पैमाइश करवायी, जिसे 'मसाहत' कहा जाता है।
 - इसने भू-राजस्व दर को बढ़ाकर 50% कर दिया।
 - अधिकांश भूमि को खालसा भूमि में परिवर्तित कर दिया।
 - एक नये राजस्व विभाग की स्थापना की, जो बकाया भू-राजस्व वसूलता था।
 - 'दीवान-ए-मुस्तखराज' = राजस्व विभाग
 - इसने दो नये कर लगाये – 1. चरी कर = चारागाह पर
2. घरी कर = आवास पर
- बाजार सुधार –
 - वस्तुओं के दाम नियंत्रित किए गए।
 - सभी व्यापारियों को बदायूँ द्वार के पास स्थापित किया गया।
 - बाजार को तीन प्रकार – सराय-ए-अदल, मण्डी, दासों व जानवरों का बाजार
 - बाजार सुधार हेतु विभाग की स्थापना की गई –
 - दीवान-ए-रियासत – यह व्यापारियों का पंजीकरण करता था।
 - शहना ए मण्डी = पुलिस अधिकारी
 - बरीद
मुन्हियान

}

गुप्तचर
 - परवाना नवीस = यह महुँगी वस्तुएँ खरीदने का लाइसेंस देता था।
 - बाजार सुधार की जानकारी देने वाले स्रोत –

✓ अमीर खुसरो	=	खजाइन उल फुतुह
✓ जियाउद्दीन बरनी	=	तारीख-ए-फिरोजशाही
✓ इब्नबतुता	=	रेहला
✓ अबु वक्र ईसानी	=	फुतुह-उस-सलातीन

• **चार खान –**

1. जफर खान – मंगोलों से लड़ता हुआ मारा गया।
2. नुसरत खान – रणथम्भौर अभियान में मारा गया।
3. उलुग खान
4. अलप खान

• **अन्य प्रसिद्ध सेनापति –**

- गाजी मलिक – इसने मंगोलों को कई बार पराजित किया।
– कालांतर में इसने तुगलक वंश की स्थापना की।
- मलिक काफूर – यह गुजरात का हिन्दू था।
– यह एक किन्नर था।
- गुजरात अभियान के समय नुसरत खाँ ने इसे भड़ौच बन्दरगाह से 1000 दीनार में खरीदा। इसलिए इसे 1000 दीनारी कहा जाता है।
- मलिक काफूर के कहने पर खिलजी ने अपने पुत्रों खिज़्र खाँ व शादी खाँ की हत्या करवा दी एवं मुबारक खिलजी को जेल में डाल दिया।
- सर्वाधिक मंगोल आक्रमण अलाउद्दीन खिलजी के समय हुए।
- मंगोल आक्रमणकारी – कादर खान, साल्दी, तार्गी आदि।

☑ **शिहाबुद्दीन उमर (1316 AD) –**

- संरक्षक – मलिक काफूर
- मुबारक खिलजी ने मलिक काफूर की हत्या करवा दी।

☑ **मुबारक खिलजी (1316–20 AD) –**

- यह शराबी था।
- इसने स्वयं को खलीफा घोषित किया।
- इसने निजामुद्दीन औलिया के अभिवादन को अस्वीकार किया।
- यह महिलाओं के कपड़े पहनता था।
- खुशरो/खुशरवशाह ने इसकी हत्या करवा दी।

☑ **खुशरवशाह (1320 AD) –**

- यह एक भारतीय मुसलमान था।
- इसने स्वयं को पैगम्बर का सेनापति घोषित किया।

- इसके विरोधियों ने "इस्लाम खतरे में हैं" के नारे लगाए।
- इसने सूफी संत निजामुद्दीन औलिया को 5 लाख टके भेंट किए।
- गाजी मलिक ने तुर्कों की सहायता से इसकी हत्या कर दी।

तुगलक वंश (1320–1414 AD)

- इन्होंने 94 वर्षों तक शासन किया = सल्तनत काल में सर्वाधिक शासन।
- यह कौरानी तुर्क थे।

☑ गयासुद्दीन तुगलक (1320–25 AD) –

- वास्तविक नाम – गाजी मलिक
- प्रथम सुल्तान जिसने अपने नाम में गाजी शब्द का प्रयोग किया।
- सिंचाई व्यवस्था को दूरस्त किया।
- प्रथम सुल्तान जिसने नहरों का निर्माण करवाया।
- सूफी संत निजामुद्दीन औलिया के साथ इसका विवाद हुआ।
- औलिया ने कहा "हनूज दिल्ली दूरस्थ" (दिल्ली अभी दूर है)
- लकड़ी के महल में दबकर इसकी मृत्यु हो गई। (लकड़ी के महल का निर्माण जौना खाँ ने करवाया)
- इब्नबतुता के अनुसार यह षड्यंत्र था। अन्य इतिहासकारों के अनुसार यह एक दुर्घटना थी।
- अमीर खुसरों की कृति 'तुगलकनामा' में गयासुद्दीन तुगलक का इतिहास है।

☑ मोहम्मद बिन तुगलक (1320–25 AD) –

- वास्तविक नाम – जौना खाँ/उलूग खाँ
- यह निजामुद्दीन औलिया का शिष्य/अनुयायी था।
- सल्तनत काल का सबसे विद्वान शासक था।
- इसको कई भाषाओं का ज्ञान था, जैसे— तुर्की, अरबी,, फारसी इत्यादि।
- इतिहासकार इसे पागल, रक्त पिपासु बताते हैं।
- इसे कई विषयों का ज्ञान था, जैसे – दर्शनशास्त्र, खगोलशास्त्र, इतिहास, ज्योतिषशास्त्र सुलेखन आदि।
- यह प्रयोगधर्मी शासक था।
- प्रयोग –

1. गंगा–यमुना दोआब में कर वृद्धि –

- भू–राजस्व को बढ़ाकर 1/2 किया, लेकिन वहाँ अकाल पड़ा।
- कालान्तर में इसने किसानों को सोनधर नामक अग्रिम कृषि ऋण प्रदान किए।
- दीवान–ए–अमीरकोही/तकाबी (कृषि विभाग) की स्थापना की।
- बंजर भूमि को उपजाऊ भूमि में बदलने का प्रयास किया।

2. प्रतीकात्मक मुद्रा –

1. चाँदी के सिक्कों के स्थान पर ताँबे के सिक्के चलाये।
2. इसने कुबलई खाँ व गेताखु से प्रभावित होकर यह कार्य किया।
3. यह प्रयोग असफल रहा। जिसके कारण निम्न है –
 - a. जनता इसके महत्व को समझ नहीं पाई।
 - b. अधिकारियों द्वारा असहयोग
 - c. जाली मुद्रा
 - d. विदेशी व्यापारियों ने स्वीकार नहीं किया व अपूर्ण तैयारी।

3. राजधानी परिवर्तन – देवगिरी को नई राजधानी बनाया गया एवं उसका नाम दौलताबाद रखा, लेकिन यह प्रयोग असफल रहा।

• परिवर्तन के कारण –

- इब्नबतुता एवं अबु वक्र इसामी के अनुसार जनता सुल्तान को गालियों भरे पत्र लिखती थी। इसलिए इसने जनता को दण्डित किया।
- बरनी के अनुसार राजधानी सल्तनत के केन्द्र में स्थापित की गई।
- अन्य इतिहासकारों के अनुसार मंगोलों से बचने के लिए राजधानी परिवर्तन किया गया।
- इस समय मंगोलों ने भारत पर एक बार आक्रमण किया, इनका नेता तरमासरीन था।
- वास्तविकता में राजधानी का पूर्णतः स्थानांतरण नहीं हुआ था, क्योंकि
 - i. हमें दिल्ली टकसाल के सिक्के प्राप्त होते हैं।
 - ii. अरब यात्री अब्बासी दो राजधानियों का उल्लेख करता है।

• खुरासान अभियान –

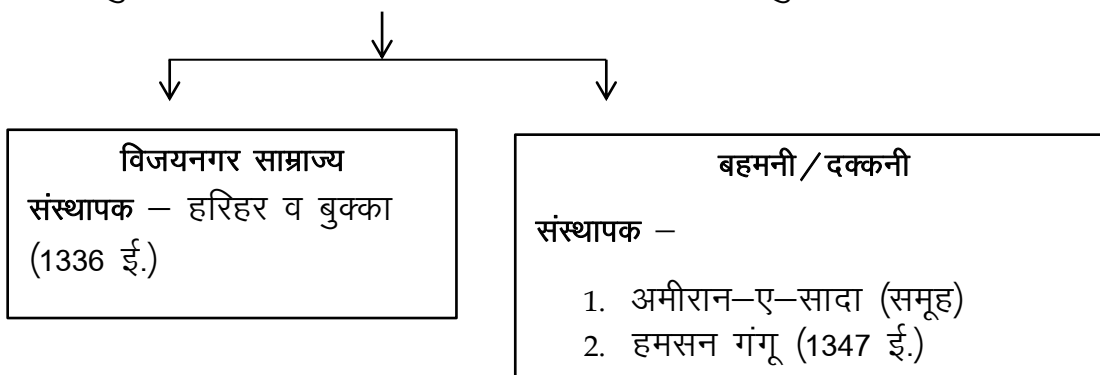
- मोहम्मद बिन तुगलक ने 3.70 लाख सैनिकों को भर्ती करवाया व उन्हें अग्रिम वेतन दिया।
- कालान्तर में यह योजना रद्द हो गई।

• कराचिल अभियान –

- नेतृत्वकर्ता – खुसरों मलिक
- इसने अपनी सैन्य टुकड़ी को कराचिल अभियान पर भेजा।
 - परन्तु खराब मौसम के कारण सभी सैनिक मारे गये।
 - मात्र 3 सैनिक जीवित बचे। तुगलक ने इनकी हत्या करवा दी।
 - सल्तनत काल में सर्वाधिक विद्रोह इनके समय हुए।
 - इसके समय सल्तनत सबसे विस्तृत था।
 - यह धार्मिक रूप से सहिष्णु शासक था।
 - यह हिन्दू त्योहारों को मानता था। जिसमें से होली इसका पंसदीदा त्योहार था।
 - यह अपनी धार्मिक मान्यताओं का दृढ़ता से पालन करता था।

जैसे – दिन में पाँच बार नमाज और रमजान के रोजे रखना।

नोट – मोहम्मद बिन तुगलक के काल में **दो नवीन साम्राज्यों** का उदय हुआ।



□ इब्नबतूता –

- मोरक्को का निवासी था।
- 1333 ई. में भारत आया।
- तुगलक ने इसे दिल्ली में काजी पद पर नियुक्त किया।
- तुगलक ने इसे कुछ समय के लिए जेल में डाला था।
- तुगलक ने इसे दूत बनाकर चीन भेजा।
- इसने अपना वृत्तान्त चीन में जाकर लिखा।
- यह चीन से सीधा मोरक्को चला गया।
- इब्नबतूता के अनुसार तुगलक बुद्धिमान के साथ-साथ सनकी भी था।
- 1351 ई. में थट्टा (सिंधु) में मोहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु हो गई।

□ फिरोजशाह तुगलक (1351–1388 ई.)

- राज्याभिषेक – थट्टा (सिंध)
- यह मोहम्मद बिन तुगलक का चचेरा भाई था।
- यह तुगलक का वैध उत्तराधिकारी नहीं था।
- यह अमीरों एवं उलेमाओं की सहायता से शासक बना।
- अमीर व उलेमा इसके समय अधिक शक्तिशाली हो गए थे।
- इसके काल में भ्रष्टाचार बढ़ गया था। इतिहासकार अफीफ भ्रष्टाचार की जानकारी देता है।
- दिल्ली आते समय इसने मस्जिदों में बड़ा दान दिया।
- अमीरों के पदों को वंशानुगत कर दिया – जैसे इक्ता व्यवस्था।

♣ सुधार –

- इसने हिसामुद्दीन जुनैद से राज्य की वार्षिक आय की गणना करवाई जो 6.78 करोड़ टंका थी।
- इसने तीन सिक्के चलाये –

- a. शशगनी – चाँदी का सिक्का।
 - b. अद्दा – ताँबा (आधा जीतल)
 - c. बिख – चौथाई जीतल
- इसने शरीयत कानून के अनुसार केवल 4 कर लागू किये –
 - 1. खुम्स – लूट (युद्ध में)
 - 2. खराज – भू-राजस्व कर
 - 3. जजिया – राजनीतिक कर
 - 4. जकात – मुस्लिमों द्वारा दिया गया दान (आय का 40वाँ हिस्सा)
- इसने 23 प्रकार के करों को समाप्त किया, जिन्हें 'अबवाब' कहा जाता है।
- इसने नहरों का निर्माण करवाया – प्रमुख नहरें – राजावाही, उलूगखानी।
- इसने 300 शहरों की स्थापना की। (शहरीकरण पर बल)
- प्रमुख शहर –
 - 1. फिरोजशाह कोटला (5वीं दिल्ली)
 - 2. फिरोजाबाद
 - 3. फिरोजपुर
 - 4. फतेहाबाद – अपने पुत्र फतेहखान की याद में।
 - 5. जौनपुर – अपने भाई जौना खान की याद में।
- इसने 1200 फलों के उद्यानों का निर्माण करवाया।
- इसने कुछ विभागों की स्थापना की। जैसे –
 - दीवान-ए-खैरात – दान विभाग (गरीब मुसलमानों के लिए)
 - दीवान-ए-इस्तिहाक – पेंशन विभाग
 - दीवान-ए-बन्दगान – गुलाम विभाग
 - शफाखाना/दार उल शफा – चिकित्सालय
- इसने एक सिंचाई कर लागू किया – हक-ए-शर्ब
- **नोट** – उश्र – मुसलमानों की भूमि।
उश्री कर – उश्र पर लगाया कर।
- फिरोज के आर्थिक सुधारों का श्रेय उसके मंत्री खान-ए-जहाँ तेलंगानी को जाता है।
- **अभियान** –
 - फिरोज तुगलक अच्छा सेनानायक नहीं था इसने दो बार बंगाल अभियान किये जो कि असफल रहे।
 - एक बार सिंध अभियान किया। इसे विश्व इतिहास में अत्यंत कुव्यवस्थित अभियान माना जाता।

❖ धार्मिक नीति –

- इसकी माँ हिन्दू थी।
- इसने पहली बार ब्राह्मणों पर जजिया कर लागू किया।
- बंगाल से लौटते समय पुरी के जगन्नाथ मन्दिर को तुड़वाया।
- ज्वाला मन्दिर से प्राप्त संस्कृत पाण्डुलिपियों का फारसी में अनुवाद करवाया।
 - अनुवादक – अजीजुद्दीन
 - अनुवाद का नाम – दलायल-ए-फिरोजशाही
- फिरोज की आत्मकथा – ‘फुतुहात-ए-फिरोजशाही’
- बरनी की पुस्तकें – ‘तारीख-ए-फिरोजशाही’, ‘फतवा-ए-जहाँदारी’।
- शम्स-ए-शिराज अफीफ की पुस्तक – ‘तारीख-ए-फिरोजशाही’
- पुस्तक – ‘सीरत-ए-फिरोजशाही’ – अज्ञात लेखक। (पुस्तक में नहरों की जानकारी मिलती है।)
- फिरोज के समय ही भारत में रेशम कीट पालने की परम्परा शुरू हुई थी।

□ गयासुद्दीन तुगलक द्वितीय (1386 ई.) –

- इस समय गुलाम अत्यधिक शक्तिशाली हो गये थे।
- सल्तनत कई भागों में विभाजित हो गया।

□ नासिरुद्दीन महमूद (1334–1412 ई.) –

- सल्तनत दिल्ली से पालम तक फैला हुआ था।
- 1398 ई. तैमूर ने दिल्ली पर आक्रमण कर उसे लूट लिया।
- सुल्तान दिल्ली छोड़कर भाग गया।
- एक भिखारी दौलत ने तैमूर को लंगड़ा कहा। (तैमूर लंग)
- तैमूर भारतीय कारीगरों को अपने साथ समरकंद ले गया, जहां इन कारीगरों ने तैमूर के मकबरे का निर्माण किया।

□ दौलत खां लोदी (1412–1414 ई.)

- खिज़्र खां ने इसकी हत्या कर दी।

सैय्यद वंश (1414–1451 ई.)

- ये मोहम्मद साहब के वंशज थे। (अरब)
- ☑ **खिज़्र खां (1414–1421 ई.)**
 - तैमूर ने इसे मुल्तान व पंजाब का गवर्नर बनाया।
 - इसने सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की।
 - उपाधि – 'रैय्यत-ए-आला' (किसानों का नेता)
 - स्वयं को तैमूर के पुत्र शाहरुख का प्रतिनिधि मानता था।
- ☑ **मुबारकशाह (1421–1434 ई.)**
 - शाह की उपाधि धारण की।
 - याहया बिन अहमद सरहिंदी इसका दरबारी विद्वान था।
 - याहया बिन अहमद की पुस्तक – 'तारीख-ए-मुबारकशाही'
- ☑ **मोहम्मदशाह (1434–1445 ई.)**
- ☑ **अलाउद्दीन आलमशाह (1445–1451 ई.)**
 - यह सल्तनत का कार्यभार बहलोल लोदी को सौंप कर बदायूँ चला गया।

लोदी वंश (1451– 1526 ई.)

- लोदी मूलतः अफगान थे।
- इनका संबंध अफगानों की शाहुखेल शाखा से था। (गिजलई कबीला)
- इनके पूर्वज घोड़ों के व्यापारी थे।

☑ **बहलोल लोदी (1451–1489 ई.) –**

- अफगानों का समाज समतामूलक समाज था।
- सुल्तानों को समानों में प्रथम माना जाता था।
- यह सिंहासन का प्रयोग नहीं करता था, कालीन पर बैठा करता था।
- यह अपने अमीरों का सदैव स्वागत करता था।
- यह अपने अमीरों को मसनद-ए-आली पुकारता था।
- इसने जौनपुर जीत लिया।
- इससे बहलोली तांबे के सिक्के चलाये जो मुगलकाल तक मान्य थे।

☑ **सिकन्दर लोदी (1489–1517 ई.) –**

- इसने सिंहासन का प्रयोग आरम्भ किया।
- इसने सुल्तान के पद को गरिमामय बनाया।
- इसके अमीर शाही फरमान का भी सम्मान करते थे।
- यह 'गुलरुखी' उपनाम से कविताएँ लिखता था।
- 1504 ई. आगरा शहर की स्थापना की।
- 1506 ई. में आगरा को राजधानी बनाया।
- इसने सिंकदरी गज का प्रयोग किया।
- एकमात्र सुल्तान जिसने खुम्स में हिस्सेदारी नहीं ली।
- इसने अनाज से 'चुंगी कर' हटा दिया।
- पसंदीदा वाद्य यंत्र – शहनाई।

⇒ **लज्जत-ए-सिकन्दरीशाही** = संगीत ग्रन्थों का फारसी अनुवाद।

⇒ **फरहंग-ए-सिकन्दरी** = आयुर्वेद ग्रन्थों का फारसी अनुवाद।

- **कथन** = यदि मैं मेरे गुलाम को पालकी में बिठा दूँ तो अमीर उसे उठाने से इन्कार नहीं करेंगे।

☸ **धार्मिक नीति –**

- इसने एक ब्राह्मण को मृत्यु दण्ड दिया।
- पुरी के जगन्नाथ मन्दिर को तुड़वाया।
- ज्वाला देवी मंदिर को तुड़वाया एवं मूर्ति के टुकड़ों को कसाइयों में वितरित किया।
- महिलाओं के मजार जाने पर रोक व मजार में दीपक जलाने पर प्रतिबंध लगाया।
- नौरोज व ताजिये पर प्रतिबंध लगाया।

☑ **इब्राहिम लोदी (1517–1526 ई.) –**

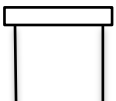
- इसने अपने व्यवहार से अमीरों को नाराज कर दिया।
- दौलत खां लोदी (पंजाब का गवर्नर) ने बाबर को भारत पर आक्रमण हेतु आमंत्रित किया।
- कथन – “मेरे अमीर मेरे शाही खेमे का सम्मान करते हैं।”

☉ **पानीपत का प्रथम युद्ध (1526 ई.) –**

- इब्राहिम लोदी v/s बाबर
- इब्राहिम लोदी सल्तनत काल का एक मात्र शासक/सुल्तान, जो युद्ध भूमि में मारा गया।

सल्तनतकालीन स्थापत्य कला

- सल्तनतकाल में ‘इण्डो-इस्लामिक’ शैली का विकास हुआ।
- यह शैली हिन्दू व मुस्लिम स्थापत्य शैली का मिश्रित रूप है।

हिन्दू शैली		मुस्लिम शैली	
a.	▪ स्तम्भ ▪ छज्जे ▪ कोष्ठक  धरणी/शहतीर	1.	▪ मीनार ▪ गुम्बद
b.	निर्माण सामग्री = बड़े-बड़े पत्थरों का प्रयोग।	2.	निर्माण सामग्री = छोटे-छोटे पत्थर, गारा चूना, टाइल्स का प्रयोग।
3	अलंकरण = देवी-देवताओं एवं अप्सराओं की मूर्तियाँ, फूल-पत्ते, बेल-बूटे, घंटियाँ।	c.	अलंकरण = कुरान की आयतें, ज्यामितीय आकृतियाँ, खुशनबीसी।

☉ **अरबस्क शैली –**

- हिन्दू व मुस्लिम स्थापत्य के अलंकरण की मिश्रित शैली।
- इसमें चमकीली टाइलों का प्रयोग सैय्यद लोदी के काल में शुरू हुआ।

ममलुककालीन स्थापत्य कला —

☑ कुतुबुद्दीन ऐबक —

1. कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद —
 - सल्तनत काल की प्रथम इमारत।
 - निर्माण हेतु 27 हिन्दू व जैन मंदिरों को तोड़ा गया।
 - इस मस्जिद में गुप्तकालीन लौह स्तम्भ स्थित है।
2. कुतुबमीनार —
 - 5 मंजिला इमारत।
 - सूफी संत कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी को समर्पित।
3. अढ़ाई दिन का झोंपड़ा —(संस्कृत की पाठशाला थी) — अजमेर।

☑ इल्तुतमिश —

1. सुल्तानगढ़ी का मकबरा
 - भारत का प्रथम मकबरा।
 - इल्तुतमिश को मकबरों का जन्मदाता कहा जाता है।
 - अपने पुत्र नासिरुद्दीन की याद में बनवाया।
2. कुतुबमीनार का निर्माण पूर्ण करवाया।
3. गंधक बावड़ी।
4. अतारकीन का दरवाजा — नागौर में सूफी संत हम्मीदुन नागौरी की याद में निर्माण करवाया।
5. इल्तुतमिश का मकबरा — स्वर्चीच शैली में निर्मित।
बदायूँ की इमारतें — जामा मस्जिद, ईदगाह मस्जिद।

☑ बलबन —

- लाल महल
- बलबन का मकबरा — प्रथम शुद्ध इस्लामिक शैली में निर्मित मेहराब।

खिलजीकालीन स्थापत्य कला –

- खिलजीकालीन इमारतों पर अत्यधिक सुन्दर अलंकरण का कार्य किया गया है।
- यह खिलजी शासकों की अच्छी आर्थिक स्थिति को दर्शाता है।

❖ अलाउद्दीन खिलजी –

1. सिरी फोर्ट
2. हजार सितुन का महल
3. नवनगर/नौनगर
4. हौज खास
5. अलाई मीनार
6. अलाई दरवाजा – वैज्ञानिक दृष्टिकोण से निर्मित गुम्बद।
7. जमात-खाना मस्जिद – शुद्ध इस्लामिक शैली में निर्मित प्रथम इमारत।

❖ मुबारक खिलजी –

1. ऊषा मस्जिद (ऊषा मंदिर) – बयाना

तुगलककालीन स्थापत्य कला –

- तुगलक कालीन इमारतों पर मजबूती का अधिक ध्यान रखा गया है।
- इन इमारतों पर अलंकरण का अभाव है।

❖ गयासुद्दीन तुगलक –

1. तुगलकाबाद बसाया।
2. तुगलकाबाद का किला –
 - इसमें 52 द्वार हैं
 - इसे 56 कोट भी कहा जाता है
 - इसे सलामी शैली में बनाया गया है।
 - यह रोमन शैली से प्रभावित है।
 - ढलवा दीवारें बनी हुई।

❖ मोहम्मद बिन तुगलक –

1. जहाँपनाह नगर बसाया
2. आदिलाबाद का किला
3. बाराखम्भा
4. सतपुल
5. बेगमपुरी मस्जिद

❖ **फिरोज तुगलक –**

1. फिरोजशाह कोटला (5वीं दिल्ली)
 2. खिरकी मस्जिद – भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण को यहां से सिक्के मिले हैं।
 3. काली मस्जिद
 4. कला मस्जिद
 5. कुश्क-ए-शिकार – इसके समय को मस्जिदों का काल कहा जाता है।
 6. खान-ए-जहां तेलंगानी का मकबरा – भारत का प्रथम अष्टकोणीय मकबरा जिसका निर्माण जौना खां ने करवाया था।
- अशोक के मेरठ व टोपरा स्तम्भों को दिल्ली स्थापित करवाया।
- ❖ **गयासुद्दीन तुगलक द्वितीय –** कबीरुद्दीन औलिया का मकबरा का निर्माण। (लाल गुंबद भी कहते हैं।)

सैय्यद वंश कालीन स्थापत्य कला –

- सैय्यद काल व लोदी काल को मकबरों का काल कहा जाता है।
- ❖ **खिज़्र खां –** खिज़्राबाद बसाया।
- ❖ **मुबारक शाह –** मुबारकाबाद बसाया, दिल्ली में स्वयं का मकबरा बनवाया।

लोदी वंश कालीन स्थापत्य कला –

- ❖ **सिकन्दर लोदी –**
 - इसने बहलोल लोदी के मकबरे का निर्माण करवाया।
 - मोठ की मस्जिद – सिकन्दर के सेनापति मियाँ भुआं ने इसका निर्माण करवाया।
- ❖ **इब्राहिम लोदी –**
 - इसने सिकन्दर लोदी के मकबरे का निर्माण करवाया।
 - यह प्रथम इमारत जहां दोहरे गुम्बद का निर्माण करवाया।
- ❖ **लोदी काल की अन्य प्रसिद्ध इमारतें –**
 1. बड़े खां का मकबरा।
 2. छोटे खां का मकबरा।
 3. दादी का मकबरा।
 4. पोती/पोली का मकबरा।

सल्तनत काल में प्रांतीय स्थापत्य शैलियाँ

1. बंगाल –

- नुकीले मेहराबों का प्रयोग।
- हिन्दू प्रतीकों को इस्लामिक स्वरूप प्रदान किया जाता था।
- अदीना मस्जिद – ‘पाण्डुआ’
 - सिकन्दरशाह द्वारा बनवाई गई।
 - भारत की सबसे विशाल मस्जिद।
 - 400 गुम्बद।
- कदम रसूल मस्जिद।
- बड़ा सोना मस्जिद।
- छोटा सोना मस्जिद।
- दाखिली दरवाजा।

2. गुजरात –

- जैन प्रभाव दिखता है।
- हिन्दू-मुस्लिम स्थापत्य का बेहतरीन समन्वय दिखता है।
- विशेषताएँ – पतले मीनार, उत्कृष्ट नक्काशी, अलंकृत कोष्ठक।
- अहमदाबाद की स्थापना अहमदशाह ने 1411 ई. में की।
- अहमदाबाद में जामा मस्जिद का निर्माण करवाया।

3. मालवा –

- आजी मस्जिद – माण्डू
- हुशंगशाह का मकबरा – माण्डू (भारत में पूर्णतः संगमरमर से बनी प्रथम इमारत।)
- हिण्डोला महल – माण्डू
- माण्डू का किला
- जहाज महल – माण्डू
- माण्डू का विजय स्तम्भ (7 मंजिला) – महमूद खिलजी
- अशफ़ी महल – माण्डू
- रानी रूपमती महल – माण्डू

4. जौनपुर –

- शार्की शैली कहा जाता है।
- यहां की मस्जिदों में मीनारें नहीं हैं।
- हिन्दू इमारतों के अवशेषों पर निर्मित इमारतें हैं।

- मुख्य इमारतें – अटाला मस्जिद, फोर्ट मस्जिद, झँझोरी मस्जिद, जामी मस्जिद, लाल दरवाजा मस्जिद आदि।
- 5. कश्मीर –
 - शाह हमदान मस्जिद, कश्मीर की सभी मस्जिदों में 'मुकुट का नगीना' समझी जाती है।
- 6. मेवाड़
- 7. बहमनी
- 8. मुल्तान

सल्तनतकालीन साहित्य

लेखक	पुस्तक
हसन निजामी	1. ताज-उल-मासिर
मिनहास उस सिराज	1. तबकात-ए-नासिरी • यह पुस्तक नासिरुद्दीन को समर्पित है। • इसमें बख्तियार खिलजी द्वारा नालन्दा विश्वविद्यालय को नष्ट करने का उल्लेख मिलता है।
अमीर खुसरो • कव्वाली व तराना का जनक। • निजामुद्दीन औलिया का शिष्य। • हिन्द का तोता कहा जाता है। • सात सुल्तानों के समकालीन रहा। • यह प्रथम व्यक्ति था, जिसने अपनी रचनाओं में हिन्दी लोकोक्ति एवं मुहावरों का प्रयोग किया। (फारसी लेखक) • इसने संगीत में योगदान दिया। • तम्बूरा व वीणा को मिलाकर सितार का आविष्कार किया। • कव्वाली, तराना जैसी गायन शैलियाँ प्रारम्भ की। • गजल व खयाल जैसी गायन शैली को विकसित किया।	1. नूह सिपेहर • भारत की भौगोलिक स्थिति का वर्णन। • कश्मीर की प्रशंसा करता है। • 'गर फिरदोस बर रहू जमीं अस्त' 'हमी अस्तो, हमी अस्तो, हमी अस्त' 2. किरान उस सादेन – बुगरा खां व कैकुबाद का संवाद। 3. मिफ्ता-उल-फुतुह – जलालुद्दीन खिलजी की जानकारी 4. खजाइन-उल-फुतुह – (तारीख-ए-अलाई) • अलाउद्दीन खिलजी की जानकारी। • जौहर शब्द का उल्लेख किया गया। • हम्मीर की बेटी ने जलजौहर किया था। 5. तुगलक नामा – तुगलक शासकों की जानकारी। 6. आशिका/आशिकी – खिज़्र खां व देवलरानी की कहानी।

सल्तनतकालीन प्रशासन

☑ **सुल्तान** – केन्द्रीकृत, निरंकुश, वंशानुगत, राजतंत्रात्मक शासन व्यवस्था थी।

1. सिद्धान्ततः –

- सुल्तान खलीफा का प्रतिनिधि होता था लेकिन व्यवहारिकता में यह स्वतंत्र शासन करता था।
- उसकी सहायता हेतु एक मंत्रिमंडल होता था, जिसे 'मजलिस-ए-खलवत' कहा जाता था।

2. वजीर – वित्त मंत्री।

3. मुशरिफ-ए-मुमालिक – महालेखाकार (वजीर के अधीनस्थ)

4. मुस्तौफी-ए-मुमालिक – महालेखा परीक्षक (वजीर के अधीनस्थ)

☑ **प्रसिद्ध विभाग –**

- | | | |
|---------------------|---|--|
| • दीवान-ए-इंशा | = | पत्राचार विभाग |
| • दीवान-ए-बरीद | = | गुप्तचर विभाग |
| • दीवान-ए-अर्ज | = | सैनिक विभाग (इसका प्रमुख – 'आरिज-ए-मुमालिक') |
| • दीवान-ए-वकूफ | = | व्यय विभाग |
| • दीवान-ए-नजर | = | उपहार विभाग |
| • दीवान-ए-रसालत | = | विदेश विभाग |
| • दीवान-ए-मुस्तखराज | = | राजस्व विभाग |
| • दीवान-ए-अमीरकोही | = | कृषि विभाग |

☑ **प्रसिद्ध अधिकारी –**

- | | | |
|------------------|---|---|
| • अमीर-ए-शिकार | = | शिकार अधिकारी। |
| • अमीर-ए-आखुर | = | अश्व अधिकारी |
| • अमीर-ए-हाजिब | = | सुल्तान का निजी सहायक। |
| • अमीर-ए-मजलिस | = | शाही दावत की व्यवस्था करने वाला। |
| • वकील-ए-दर | = | शाही महल की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला। |
| • शहना-उस-पिल | = | हस्तिशाला मामलों का प्रमुख |
| • सद्र-उस-सुदुर | = | धार्मिक मामलों का प्रमुख। |
| • काजी-उल-कज्जात | = | न्यायाधीश। |

☑ **प्रांतीय प्रशासन –**

- | | | |
|----------|---|-------------------------------------|
| • इक्ता | = | इक्तेदार/वलि |
| • वजे | = | छोटी इक्ता |
| • प्रमुख | = | वजेदार (लोदी काल में लोकप्रिय हुई।) |

☑ **सैनिक प्रशासन –**

- हश्म-ए-कल्ब = केंद्रीय सेना
- हश्म-ए-अतराफ = प्रांतीय सेना
- सवार-ए-कल्ब = घुड़सवार सेना
- खास-ए-खैल = अंगरक्षक प्रमुख
- 10 सवार = 1 सर ए नौबत / सर-ए-खेल
- 10 सर-ए-नौबत = 1 सिपहसालार
- 10 सिपहसालार = 1 अमीर
- 10 अमीर = 1 मलिक
- 10 मलिक = 1 खान
- अलाउद्दीन खिलजी ने नियमित सेना का गठन किया।
- मोहम्मद बिन तुगलक ने दशमलव पद्धति पर सेना का गठन किया।

☑ **प्रमुख हथियार –**

1. मंजनिक
2. गुलेल
3. अर्राट

☑ **न्याय प्रशासन –**

- सर्वोच्च न्यायाधीश = सुल्तान
- प्रधान न्यायाधीश = काजी
- न्याय विभाग का प्रमुख = काजी
- काजी जिसकी सहायता से न्याय करता था = मुफ्ती
- फौजदारी मामलों में हिन्दू एवं मुसलमानों हेतु = समान कानून
- लेकिन दीवानी मामलों में हिन्दू व मुसलमानों हेतु = अलग कानून।
- गाँवों में पण्डित / काजी न्याय का कार्य करते थे।

☑ **कानून के स्रोत –**

1. कुरान
2. हदीस = मोहम्मद साहब की शिक्षाएँ एवं जीवन की घटनाएँ
3. इज्मा = धार्मिक व्याख्याकारों की शिक्षाएँ।
4. कयास = काजी द्वारा अनुमानित सजा।
5. देश का कानून = स्थानीय कानून।

☑ राजस्व व्यवस्था –

- भू-राजस्व कर, राजस्व का प्रमुख स्रोत था।
- कनकूत = भू-राजस्व वसूलने की अन्य पद्धति।
- राजस्व वसूलने की पद्धति बटाई कहलाती थी।
- बटाई के प्रकार –
 1. खेत बटाई
 2. लंक बटाई
 3. रास बटाई
- बटाई के अन्य प्रसिद्ध नाम –
 1. किस्मत-ए-गल्ला
 2. गल्ला-ए-बख्शी
 3. हासिल

नोट –

- शराब बनाने की आसवन विधि का आरम्भ हुआ।
- कागज बनाने की विधि तुर्कों ने आरम्भ की।
- कलई विधि आरम्भ हुई। (बर्तन चमकाना)

विजयनगर साम्राज्य की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ

- स्थापना = 1336 ई.
- संस्थापक = हरिहर एवं बुक्का
- इनके पिता का नाम = संगम
- हरिहर एवं बुक्का पहले काकतीय वंश के शासक की सेवा में थे।
- मोहम्मद बिन तुगलक द्वारा युद्ध बन्दी बनाये गये।
- दोनों ने इस्लाम स्वीकार किया।
- दक्षिण भारत के विद्रोहों का दमन करने हेतु गये।
- विधारण्य ने इन्हें हिन्दू धर्म में दीक्षित किया।
- हरिहर व बुक्का ने विधारण्य एवं सायण की सहायता से विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की। (तुगलक नदी के दक्षिणी छोर पर अन्नेगोड़ी स्थान पर)
- विजयनगर का आधुनिक नाम = हम्पी।

- संगम वंश = 1336–1485 ई.
- सालुव वंश = 1485–1505 ई.
- तुलुव वंश = 1505–1570 ई.
- अराविडू वंश = 1570 ई.

संगम वंश (1336–1485 ई.)

☑ हरिहर (1336–1356 ई.)

- विजयनगर को अपनी राजधानी बनाया।
- इसे 'दो समुद्रों का स्वामी' कहा जाता है।

☑ बुक्का (1356–1377 ई.)

- उपाधि – वेदमार्गप्रतिष्ठापक
- इसे 'तीन समुद्रों का स्वामी' कहा जाता है
- इसने दक्षिण भारत में वैदिक संस्कृति को प्रसारित किया। (सायण की सहायता से)
- बुक्का के पुत्र कंपा ने मदुरै को जीत लिया था।
- कंपा की पत्नी गंगादेवी ने 'मदुरैविजयम्' की रचना की।

☑ **हरिहर द्वितीय (1377–1404 ई.)**

- उपाधि – ‘महाराजाधिराज’
- हरिहर व बुक्का ने महाराजाधिराज की उपाधि धारण नहीं की।

☑ **देवराय प्रथम –**

- इसने तुर्क धनुर्धरों को अपनी सेना में शामिल किया।
- इसके समय इटली के यात्री निकोलो कोंटी ने विजयनगर की यात्रा की।
- निकोलो के अनुसार इसने तुगभद्रा नदी के किनारे बाँध व नहरों का निर्माण करवाया।
- इसके समय में बहमनी साम्राज्य के साथ ‘रायचुर दोआब विवाद’ आरम्भ हो गया।

☑ **देवराय द्वितीय –**

- उपाधि – इम्माडि देवराय, गजबेटकर (हाथी का शिकारी)
- इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक।
- इसने बड़े स्तर पर तुर्क धनुर्धरों को अपनी सेना में भर्ती किया एवं एक मस्जिद का निर्माण करवाया।
- इसके समय फारस का दूत अब्दुल रज्जाक विजयनगर आया।
- अब्दुल रज्जाक विजयनगर की प्रशंसा करता है।
- देवराय द्वितीय एक विद्वान शासक था।
- इसके द्वारा रचित पुस्तक – महानाटकसुधानिधि
- इसने पतंजलि के ‘महाभाष्य’ एवं बादरायण के ब्रह्मसूत्र पर टीका लिखी।
- इसके मंत्री लकन्ना को ‘समुद्र का स्वामी’ कहा जाता है।
- इसने समुद्री व्यापार पर विशेष बल दिया।

☑ **विरुपाक्ष द्वितीय –**

- अंतिम शासक
- चंद्रनगर के गवर्नर सालुव नरसिंह ने नए वंश की स्थापना की।

सालुव वंश (1485–1505 ई.)

☑ **सालुव नरसिंह (1485–1491 ई.)** – इसका सेनापति नरसा नायक था।

☑ **इम्माडि नरसिंह –**

- वास्तविक शक्तियाँ नरसा नायक के पास थी।
- नरसा नायक ने इसे पेनुकोण्डा के किले में कैद कर दिया।
- नरसा नायक के पुत्र वीर नरसिंह ने इम्माडि नरसिंह की हत्या कर दी।

तुलुव वंश (1505–1570 ई.)

☑ **वीर नरसिंह (1505–1509 ई.) –**

- यह धार्मिक शासक था।
- इसने अपनी प्रजा को युद्धप्रिय बनाया।

☑ **कृष्णदेवराय (1509–1529 ई.)**

- उड़ीसा के गजपति शासक प्रताप रूद्र देव को पराजित किया।
- गजपति की बेटी से विवाह किया।
- इसने पुर्तगालियों से मित्रता की।
- पुर्तगाली गवर्नर अल्बुकर्क इसका मित्र था।
- इसने पुर्तगालियों को भटकल में किला बनाने की अनुमति दी।
- पुर्तगालियों ने बीजापुर से गोवा छीन लिया।

- डोमिंगो पायस
 - बारबोसा
 - लुई
- } पुर्तगालियों ने विजयनगर की यात्रा की।

- यह एक विद्वान शासक था।

- उपाधियाँ – अभिनव भोज,
आन्ध्र भोज

- पुस्तकें –

1. आमुक्त माल्यद –

- भाषा – तेलुगू
- पाँच तेलुगू महाकाव्यों में से एक।
- इसमें वैष्णव धर्म की जानकारी मिलती है।

2. उषा परिणय } संस्कृत भाषा में लिखित।

3. जाम्बवती कल्याणम }

- इसके समय तेलुगू, संस्कृत, कन्नड़ तीनों भाषाओं में साहित्य की रचना की।
- इसे तेलुगू भाषा का 'क्लासिकी युग' कहते हैं।
- इसके दरबार में अष्ट दिग्गज थे।

1. अल्लासीन पेड़ना/पेदन्ना – इसे तेलुगू कविता का पितामह कहा जाता है।

पुस्तकें – हरिकथासार, मनु चरित्र

- | | |
|---------------------|---|
| 2. तेनाली रामाकृष्ण | – पाण्डुरंग माहात्म्य (तेलुगू भाषा के पाँच महाकाव्यों में एक) |
| 3. धूर्जटि | – कालहस्ति माहात्म्य |
| 4. नंदी तिम्मन | – पारिजात हरण |
| 5. भट्टमूर्ति | – नरसभूपालियम, सुचरित |

6. अय्यल राजू राम चंद्र — रामाभ्युदियम
7. पिंगली सुरन — गरुड़ पुराण
8. मादय्यगरि मल्लम् — राजशेखर चरित
- कृष्णदेवराय ने विट्ठल मंदिर का निर्माण करवाया।
- इसने ब्राह्मणों एवं मंदिरों को भूमि का अनुदान दिया, जिन्हें 'देवदेय' या 'ब्रह्ममदेय' कहा जाता है।
- इसके समय शिक्षा का विकास हुआ, मंदिर शिक्षा केंद्र के रूप में विकसित हुए।

☑ **अच्युत देवराय —**

- इसने अपना राज्याभिषेक तिरुपति बालाजी मंदिर में करवाया।
- इसने मण्डलेश्वर नामक अधिकारी की नियुक्ति की।
- पुर्तगाली यात्री नूनीज ने विजयनगर की यात्रा की।

☑ **सदाशिव —**

- संरक्षक — रामराय।
- रामराय पड़ोसी राज्यों के मामले में अत्यधिक हस्तक्षेप करता था।
- **तालीकोटा/राक्षस तंगड़ी/बन्ने हट्टी का युद्ध — 1565 ई.**
 - विजयनगर v/s बीजापुर (नेतृत्वकर्ता)+अहमदनगर+गोलकुण्डा+बीदर
 - बरार ने इस युद्ध में हिस्सा नहीं लिया था।
 - रामराय लड़ता हुआ मारा गया।
 - विजयनगर की हार हुई क्योंकि विजयनगर के दो सैनिकों ने विश्वासघात किया।

अराविडू वंश (1570 ई.)

- संस्थापक = तिरुमल
- राजधानी = पेनुकोंडा एवं कालांतर में चन्द्रगिरी
- विजयनगर साम्राज्य का अंतिम शासक रंगभट्ट था।

☑ **विजयनगर की प्रशासनिक व्यवस्था —**

- केंद्रीकृत, निरंकुश शासन व्यवस्था।
- राजत्व के दैवीय सिद्धांत को मानते थे।
- राज्याभिषेक मंदिरों में करवाते थे।
- चाणक्य के 'सप्तांग सिद्धांत' को मानते थे।
- राजा 2. क्षेत्र 3. अमात्य 4. सेना 5. दुर्ग 6. कोष 7. मित्र

- बड़े अधिकारी = दण्डनायक
- छोटे अधिकारी = कार्यकर्ता

☑ **प्रांतीय प्रशासन –**

- कृष्णदेवराय के समय विजयनगर साम्राज्य 6 प्रान्तों में विभाजित था।
- केवल शाही परिवार के लोगों को गवर्नर के पद पर नियुक्त किया जाता था।
- उन्हें सिक्के चलाने का अधिकार था।
- प्रांतपतियों को भूमि देने का अधिकार होता था।

☑ **नायकर प्रथा –**

- अधिकारियों को उनकी सेवा के बदले भूमि दी जाती थी।
- इसे भूमि को 'अमरम' कहा जाता था, एवं नायक को अमरनायक कहा जाता था।

☑ **आयंगर व्यवस्था –**

- गाँवों के प्रशासनिक व न्यायिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन हेतु 12 सदस्य होते थे, जिन्हें आयंगर कहा जाता था।
- यह पद वंशानुगत होता था, एवं इसे बेचा जा सकता था।

☑ **सामाजिक स्थिति –**

- समाज स्पष्टतः 4 वर्णों में विभाजित नहीं था।
- ब्रह्मण प्रशासनिक कार्य करते थे।
- दास व्यापार = बेसबाग
- कारीगर = वीर पंचाल
- उत्तर भारतीयों को 'बड़वा' कहते थे।
- महिलाओं की स्थिति अच्छी थी।
- महिलाओं को अंगरक्षकों के रूप में नियुक्त किया जाता था।
- महिलाओं को प्रशासनिक पदों पर नियुक्त किया जाता था।
- विदेशी यात्रियों के अनुसार सती प्रथा का प्रचलन था।
- देवदासी प्रथा का प्रचलन था।
- वेश्यावृत्ति का प्रचलन था।

☑ **स्थापत्य कला –**

1. **मंदिर स्थापत्य –**

- पल्लव = द्रविड़ मंदिर स्थापत्य कला का आरम्भ।
- चोल = विमान
- पाण्ड्य = गोपुरम

- विजयनगर = अलंकृत स्तम्भ, कल्याण मण्डप, अम्मान मंदिर।
- उदाहरण = लेपाक्षी मंदिर (वीरभद्र मंदिर) = आंध्रप्रदेश
पम्पा देवी मंदिर = विजयनगर
- गोपुरमों के अलंकरण पर विशेष बल दिया गया।
- देवराय द्वितीय ने हजारों स्वामी मंदिर का निर्माण करवाया।
- अच्युत देवराय ने अच्युत देवराय मंदिर का निर्माण करवाया।
- यहां का प्रमुख आकर्षण विरुपाक्ष मंदिर व लोट्स महल है।
- विरुपाक्ष मंदिर का पुनः निर्माण विजयनगर साम्राज्य के समय हुआ।
- हम्पी-यूनेस्को की विश्व विरासत स्थल में शामिल है।

2. गैर-मंदिर स्थापत्य –

- विजयनगर शहर की स्थापना की गई।
- विजयनगर की इमारतें – राजा का महल, महानवमी डिब्बा, कमल महल, मस्जिद, हाथियों का अस्तबल।
- इन इमारतों में हिन्दू-इस्लामिक स्थापत्य का संश्लेषण दिखता है।
- कृष्णदेवराय ने नांगलपुर बसाया।
- विजयनगर में चित्रकला का विकास हुआ – मुख्यतः भित्ति चित्र, मुख्य रूप से मंदिरों में चित्रण, विविध रंगों का प्रयोग।
- विजयनगर शासकों के संरक्षण में संगीत कला का विकास हुआ, व संगीत पर अनेक रचनाएँ लिखी गईं जैसे –
 1. संगीत सर्वोदय = लक्ष्मीनारायण
 2. संगीत सार = सायण
 3. स्वरमेल कलानिधि = रामामात्य

मुगल काल (1526–1707 ई.)

☑ बाबर —

- जन्म स्थान — फरगना (उज्बेकिस्तान), मध्य एशिया, 1483 ई.
- दादी — दौलत अहसान बेगम। (इसकी सहायता से 1494 ई. में फरगना का शासक बना।)
- वह समरकंद को जीतना चाहता था। (1501 ई. में उसने समरकंद को कुछ समय के लिए जीता।)
- **1504 ई.** में — काबुल जीता।
- **1519 ई.** में — भैरा व बाजौर पर आक्रमण।
 - यह बाबर का भारत पर प्रथम आक्रमण था, और बाबर ने पहली बार भारत में तोपखाने का प्रयोग किया था।
- **1526 ई.** पानीपत का प्रथम युद्ध
 - बाबर ने तोपखाने का प्रयोग किया।
 - तोपची — अली व मुस्तफा।
 - तुगलमा पद्धति/उस्मानी पद्धति का प्रयोग।
 - इस युद्ध के बाद बाबर ने कहा कि 'काबुल की गरीबी और नहीं'
 - प्रत्येक काबुलवासी को शाहरुख नामक चाँदी का सिक्का दिया इस कारण कलन्दर के रूप में प्रसिद्ध हुआ।
- **1527 ई.** — खानवा का युद्ध = बाबर व राणा सांगा के बीच।
- **1528 ई.** — चंदेरी का युद्ध = बाबर व मेदिनीराय के बीच।
- **1529 ई.** — घाघरा का युद्ध = बाबर व महमूद लोदी के बीच (अफगान)
- **1530 ई.** — बाबर की मृत्यु।
- **तुजुक-ए-बाबरी/बाबरनामा** —
 - बाबर की आत्मकथा (भाषा — तुर्की एवं चगताई शैली)
 - पायदा खां ने इसका फारसी में अनुवाद किया।
 - अब्दुल रहीम खान खाना ने अकबर के समय इसका फारसी में अनुवाद किया।
 - आर्सकीन व लीडेन ने इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया।
 - इसमें भारत की राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सामाजिक स्थिति का वर्णन किया गया है।
 - दो हिन्दू राजाओं का उल्लेख —
 1. कृष्णदेवराय — भारत का सबसे शक्तिशाली शासक बताया।
 2. राणा सांगा — इसके शौर्य की प्रशंसा करता है।

- 5 मुस्लिम राज्यों का उल्लेख मिलता है – दिल्ली, बंगाल, गुजरात, मालवा, बहमनी।
- भारत को करीगरों का देश बताता है।
- भारत को आर्थिक रूप से समृद्ध बताता है।
- आम को फलों का राजा बताता है।
- गंगा नदी का उल्लेख करता है।
- भारत के तीन अभिशाप बताता है – लू, आँधी, गर्मी।
- फारसी चित्रकार 'बिहजाद' के नाम का उल्लेख करता है।

☑ हुमायूँ –

- शाब्दिक अर्थ – भाग्यशाली।
- हुमायूँ ने अपना साम्राज्य भाइयों में वितरित किया –
 1. कामरान = काबुल
 2. अस्करी = सम्भल
 3. हिन्दाल = मेवात
- दौहरिया का युद्ध {1532 ई.} –
 - हुमायूँ (जीत) व महमूद लोदी (अफगान) के बीच।
 - 1532 ई. को चुनार का घेराव किया।
 - शेरखां ने हुमायूँ के साथ संधि कर ली।
- गुजरात अभियान (1534–1535 ई.) –
 - हुमायूँ का गुजरात पर अधिकार।
 - बहादुरशाह ने पुर्तगालियों की सहायता से गुजरात पुनः जीत लिया।
 - कालान्तर में पुर्तगालियों ने बहादुरशाह की हत्या कर दी।
- चुनार अभियान (1537 ई.) –
 - शेरखां बंगाल की तरफ चला गया।
 - शेरखां ने बंगाल को उजाड़ दिया।
 - हुमायूँ ने बंगाल को पुनः बसाया एवं उसका नाम 'जन्नताबाद' रखा।
- चौसा का युद्ध (1539 ई.) –
 - शेरखां व हुमायूँ के बीच हुआ जिसमें हुमायूँ की हार हुई।
 - हुमायूँ ने कर्मनासा नदी में छलांग लगा दी व निजाम सक्का भिस्ती की सहायता से अपनी जान बचाई।
 - हुमायूँनामा के अनुसार निजामदि सक्का एक दिन का बादशाह बना एवं उसने चमड़े के सिक्के चलाये।

- **कन्नौज या बिलग्राम का युद्ध (1540 ई.) –**
 - हुमायूँ व शेरशाह सूरी के बीच।
 - हुमायूँ पराजित होकर अमरकोट (सिंध) चला गया।
 - अमरकोट के राणा वीरसाल ने हुमायूँ को शरण दी।
- हुमायूँ ने मीर बाबा दोस्त (हिन्दाल के गुरु) की पुत्री हमीदा बानो बेगम से शादी की।
- हमीदा बानो बेगम अकबर की माँ थी।
- **1545 ई.** को हुमायूँ ने फारस के शाह की सहायता से काबुल व कंधार को जीत लिया।
- **मच्छीवाड़ा का युद्ध {1555 ई.} –**
 - हुमायूँ ने नसीब खाँ व तातार खाँ को पराजित किया।
- **सरहिन्द का युद्ध {1555 ई.} –**
 - हुमायूँ ने सिकन्दर सूर को पराजित किया।
- **1556 ई.** – दीनपनाह महल के शेरमण्डल पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरकर हुमायूँ की मृत्यु हो गई।
- हुमायूँ के हमशक्ल मुल्ला शाह बेगशी को जनता के सामने प्रस्तुत किया गया।
- प्रशासनिक कार्य – तारदी बेग संभालता था।
- हेमू ने दिल्ली पर आक्रमण किया एवं जीत लिया।
- इतिहासकार लेनपूल ने कहा था कि –

‘हुमायूँ लड़खड़ाता हुआ ही जीया व लड़खड़ाता हुआ ही मरा।’

☑ शेरशाह सूरी –

- बचपन का नाम = फरीद
- जन्म स्थान = बजवाड़ा, होशियारपुर
- शिक्षा = जौनपुर (इसके पिता जौनपुर के शासक की सेवा में)
- सासाराम व ख्वासपुर में इसके पिता को जमींदारी मिली थी।
- शेरशाह ने प्रशासनिक अनुभव सासाराम व ख्वासपुर से प्राप्त किये।
- शेरशाह बंगाल के शासक बहार खाँ लोहानी/नुहानी के पास सेवा गया।
- बहार खाँ लोहानी ने इसे शेरखाँ की उपाधि दी।
- शेरखाँ ने चन्देरी के युद्ध में हिस्सा लिया था {1528 ई.}
- **चौसा का युद्ध (1539 ई.) –**
 - इस युद्ध के पश्चात् शेरखाँ ने ‘शाह’ की उपाधि धारण की।
- **कन्नौज का युद्ध (1540 ई.) –**
 - युद्ध के पश्चात् शेरशाह ने आगरा व दिल्ली पर अधिकार कर लिया।

- शेरशाह ने चुनार की विधवा शासिका (लाड बेगम) से विवाह किया।
- घाघरा के युद्ध में भाग लिया।
- बंगाल अभियान – (1541 ई.)
- गक़ख़ों के विरुद्ध अभियान – (1541 ई.)
- मालवा अभियान – (1542 ई.)
- **रायसीन अभियान (1543 ई.) –**
 - पूरणमल यहां का शासक था।
 - शेरशाह सूरी ने षड्यंत्रपूर्वक इसकी हत्या कर दी।
 - यह घटना शेरशाह सूरी के जीवन पर कलंक है।
 - इस घटना से आहत होकर कुतुब खां ने आत्महत्या कर ली।
- **गिरी सुमेल का युद्ध (1544 ई.) –**
- **कालिंजर अभियान (1545 ई.) –** यहां का शासक किरत सिंह था।
- शेरशाह 'उक्का' नामक आग्नेयास्त्र चलाते समय घायल हो गया एवं उसकी मृत्यु हो गई।

❖ सुधार –

1. बंगाल में प्रशासनिक सुधार –

- शेरखां ने बंगाल को सरकार व परगनों में विभाजित किया।
- शक्तियों का विकेन्द्रीकरण किया।
- सरकार –
 - शिकदार-ए-शिकदारान (प्रशासनिक अधिकारी)
 - मुंसिफ-ए-मुसिफान (राजस्व अधिकारी)
- परगना –
 - शिकदार (प्रशासनिक शक्तियाँ)
 - मुंसिफ (राजस्व शक्तियाँ)
- एक नये पद का सृजन किया = अमीन/अमीर-ए-बांग्ला।
- प्रथम अमीर-ए-बांग्ला = काजी फजिलात।

2. मुद्रा सुधार –

- इसने दो सिक्के आरम्भ किये – चाँदी का रूपया (178 ग्रेन का)
ताँबा का रूपया (380 ग्रेन का)
- इसने 23 टकसाल स्थापित करवाई।
- सिक्कों पर टकसाल व शासक का नाम अरबी व देवनागरी लिपि में लिखा होता था।

3. भू-राजस्व सुधार –

- भूमि की पैमाइश करवाई।
- भूमि को तीन भागों में विभाजित किया गया = उत्तम, मध्यम व निम्न
- इसने जागीरदारों की स्थिति को कमजोर किया।
- इसने सिकन्दरी गज का प्रयोग किया।
- इसने दो उपकर लागू किये – जरीबाना = भूमि पैमाइश कर (2.5 प्रतिशत)
महासिलाना = भू-राजस्व संग्रहण कर (5 प्रतिशत)
- इसने अकाल राहत कोष कर लागू किया, किसानों को पट्टे जारी किये।
- किसानों ने कबूलियत लिखी।
- शेरशाह सूरी की भू-राजस्व व्यवस्था को 'रे' (रयि) (फसलों की कीमत सरणी) कहा जाता है।

4. न्यायिक सुधार –

- न्याय की सर्वोच्चता में विश्वास करता था।
- इसने अपने भतीजे को मृत्युदण्ड दिया।
- इसने स्थानीय उत्तरदायित्व के सिद्धांत को लागू किया।
- अब्बास खां शेरवानी के अनुसार – 'शेरशाह सूरी के शासनकाल में एक बूढ़ी महिला अपने सिर पर हीरे जवाहरात से भरी टोकरी लेकर जाये तो किसी को उसे लूटने की हिम्मत नहीं होती'

5. अन्य सुधार –

- सड़कों का निर्माण करवाया
 - जैसे – जी. टी. रोड (ग्रांड ट्रक रोड)
 - सोनार – पेशावर
 - लाहौर – मुल्तान
 - आगरा – चित्तौड़
 - आगरा – बुरहानपुर
- इसने 1700 सरायों का निर्माण करवाया।
- कुएँ खुदवाये और पेड़ लगाये।
- इतिहासकार कनूनगो ने इन सरायों को **सूर साम्राज्य की धमनियाँ** कहा है।
- शेरशाह सूरी ने डाक व्यवस्था को दुरुस्त किया।

☑ **स्थापत्य कला —**

- इसने पटना शहर को बसाया।
- दिल्ली में 'किला-ए-कुहना' मस्जिद का निर्माण करवाया।
- दिल्ली में लाल दरवाजे का निर्माण करवाया।
- बिहार में रोहताशगढ़ किले का पुनर्निर्माण करवाया।
- उत्तर पश्चिमी सीमा पर रोहताशगढ़ किले का निर्माण करवाया।
- कन्नौज के पास शेरपुर नगर बसाया।
- शेरशाह सूरी का मकबरा स्वयं ने बनवाया — सासाराम (बिहार)

नोट —

1. टोडरमल इसके दरबार में था।
2. पद्मावत का लेखक = मलिक मोहम्मद जायसी, इसका समकालीन था।
3. अब्बास खां शरबानी इसके दरबार में था।
(पुस्तक = तारीख-ए-शेरशाही/तोहफा-ए-अकबरशाही)

☑ **इस्लाम शाह सूर (1545–54) —**

- मानकोट के किलों का निर्माण करवाया।
- कानूनों का संकलन किया।
- इसकी मृत्यु पश्चात् सूर साम्राज्य 5 भागों में विभाजित हुआ।

☑ **सिकन्दर सूर (1554–1555 ई.) —**

- सरहिन्द के युद्ध (1555 ई.) में हुमायूँ ने इसे पराजित किया एवं दिल्ली को जीत लिया।

☑ **हेमू —**

- यह रेवाड़ी के बाजार में नमक का दलाल था।
- यह आदिलशाह (चुनार) का सेनापति था।
- हेमू ने लगातार 22 लड़ाइयाँ जीती थी।
- हेमू ने आगरा व दिल्ली पर अधिकार कर लिया था।
- हेमू ने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की।
- यह दिल्ली का अंतिम हिन्दू शासक था।

☑ **अकबर —**

- जन्म = 15 अक्टूबर, 1542 ई. (अमरकोट के राजा वीरसाल के महल में)
- बचपन का नाम = बदरुद्दीन
- संरक्षक = मुनीम खां

- दूसरा संरक्षक = बैराम खां
- राज्याभिषेक = कलानौर (पंजाब)
- **पानीपत का द्वितीय युद्ध = 1556 ई.**
 - अकबर व हेमू के बीच।
 - हेमू लड़ता हुआ मारा गया।
- अकबर ने गाजी की उपाधि धारण की।
- 1560 ई. तक सभी शक्तियाँ बैराम खां के पास थी।
- **तलवाड़ा/तिलवाड़ा का युद्ध –**
 - अकबर व बैराम खां के बीच।
 - अकबर ने बैराम खां के समक्ष 3 प्रस्ताव रखे –
 1. मालवा व चंदेरी की सूबेदारी
 2. बादशाह के आंतरिक मामलों का प्रमुख
 3. हज यात्रा
- बैराम खां हज यात्रा पर चला गया।
- पाटन (गुजरात) में एक अफगान ने बैराम खां की हत्या की।
- पाटन के फकीरों ने बैरामखां का अंतिम संस्कार किया।
- **पेटीकोट शासन/अतका खेल (1560–1562 ई.) –**
 - अकबर पर हरम का प्रभाव था।
 - महामअनगा
 - जीजी अनगा
 - आधम खां
 - मुनीम खां व हरम की महिलाएँ
- 1562 ई. को अकबर ने आधम खां की हत्या करवा दी।
- इस सदमे से महामअनगा की मृत्यु हो गई।
- अकबर हरम के प्रभाव से मुक्त हो गया।
- **आरम्भिक सुधार – 1562 ई.**
 - युद्ध बंदियों के धर्मांतरण पर रोक।
 - दास प्रथा पर रोक।
 - 1563 ई. तीर्थ यात्रा कर को समाप्त किया।
 - 1564 ई. जजिया कर को समाप्त किया
- **अभियान –**
 - मालवा अभियान = 1561 ई.

- बाजबहादुर (मालवा) अकबर के दरबार में आया।
- रानी रूपमती ने आत्महत्या कर ली।
- **गोंडवाना अभियान = 1564 ई.**
 - राजधानी = जबलपुर
 - रानी दुर्गावती ने मतबूती से मुगल सेना का सामना किया एवं अंत में लड़ती हुई मारी गई।
 - इसका पुत्र वीरनारायण वहां का शासक था।
- **चित्तौड़गढ़ अभियान = 1567–68 ई.**
- **गुजरात अभियान = 1572–73 ई.**
 - अकबर ने गुजरात शासक मुजफ्फर तृतीय को पराजित किया।
 - गुजरात अभियान की याद में बुलंद दरवाजे का निर्माण करवाया।
 - इतिहासकार स्मिथ ने गुजरात अभियान को विश्व का सबसे द्रुत गति से किया गया अभियान बताया।
 - सीकरी का नाम फतेहपुर सीकरी कर दिया गया।
 - कैम्बे (खम्भात की खाड़ी) में अकबर ने पहली बार समुद्र देखा।
- **काबुल अभियान – 1581 ई.**
 - अपने चचेरे भाई मिर्जाहकीम को पराजित किया एवं बख्तुनिशा को वहां का गर्वनर बनाया।
 - 1586 ई. में मानसिंह को वहां का गवर्नर नियुक्त किया।
- **कश्मीर अभियान – 1586 ई.**
 - बीरबल, युसफजाई कबीले से लड़ता हुआ मारा गया।
 - अबुल-फजल ने इसे अकबर के जीवन की सबसे दुःखदायी घटना बताया।
- **सिंध अभियान – 1591 ई.**
- **ओडिशा अभियान – 1592 ई.**
- **कंधार व बलूचिस्तान – 1595 ई.**
- **खानदेश (असीरगढ़) अभियान – 1601 ई.**
 - राजधानी = बुरहानपुर
 - अकबर ने असीरगढ़ के किले को सोने की चाबियों से खोला था।
 - यह अकबर का अंतिम अभियान था।

★ **अकबर के नवरत्न –**

1. तानसेन -

- वास्तविक नाम = रामतनु पाण्डेय
- उपाधि = कंठाभरणवाणीविलास

- मकबरा = ग्वालियर
- शिक्षा = ग्वालियर संगीत शिक्षा विद्यालय।
- पहले रीवा के राजा रामचंद्र के दरबार में थे।
- गुरु = हरिदास जी, दूसरे गुरु = मोहम्मद गौस (इनसे प्रभावित होकर इस्लाम अपनाया)
- तानसेन ने ध्रुपद गायिकी का विकास किया।
- नई राग एवं रागिनियाँ बनाई –
 - राग दीपक
 - मियां का मल्हार
 - मियां की टोड़ी
 - मियां की सांरग
 - दरबारी कान्हड़ा

2. बीरबल -

- वास्तविक नाम = महेश दास
- 1583 ई. में न्याय विभाग का प्रमुख बनाया।
- इसने तौहीद-ए-इलाही धर्म अपनाया था। (एकमात्र हिन्दू था।)

3. अबुल फजल -

- पिता = शेख मुबारक
- बड़ा भाई = फैजी
- जन्म स्थान = नागौर
- पुस्तकें =
 - अकबरनामा प्रथम
 - अकबरनामा द्वितीय
 - अकबरनामा तृतीय { आइन-ए-अकबरी }

4. फैजी -

- जन्म स्थान = नागौर
- उपाधि = राजकवि
- महाभारत व रामायण का फारसी में अनुवाद किया, महाभारत को 'रज्मनामा' कहा जाता है।
- सहायक = नकीब खां, अब्दुल कादिर बदायूनी
- इसने लीलावती का फारसी में अनुवाद किया।

5. अब्दुल रहीम खान खाना -

- उपाधि = खान खाना
- यह बैराम खां का पुत्र था।
- यह जहाँगीर का गुरु था।
- यह हिन्दी भाषा के कवि थे।
- पुस्तक = बैरवे नायिका का भेद

6. टोडरमल -

- उपाधि = राजा
- पहले इसे गुजरात का दीवान नियुक्त किया।
- टोडरमल ने भू-राजस्व सुधार किये।
- इसने 'जाब्ती व्यवस्था' लागू की।
- इसने 'आइन-ए-दहशाला' पद्धति को लागू किया।

7. मानसिंह -

8. मुल्ला दो प्याजा -

9. हकीम हुकाम - यह खानसामा था।

★ अकबर की धार्मिक नीति -

- अकबर ने सुलह-ए-कुल की नीति अपनाई।
- 1562 ई. - युद्ध बंदियों के धर्मांतरण पर रोक।
- 1562 ई. - दास प्रथा पर रोक।
- 1563 ई. - तीर्थयात्रा कर को समाप्त किया।
- 1564 ई. - जजिया कर को समाप्त किया।
- 1575 ई. - इबादतखाने की स्थापना (मुस्लिम विद्वानों को आमंत्रित)
- 1578 ई. धर्म संसद की स्थापना। (अन्य धर्मों के विद्वानों को आमंत्रित किया।)
 - हिन्दू धर्म = देवी सिंह, पुरुषोत्तम
 - पारसी धर्म = दस्तूरजी मेहरजी राणा (अकबर ने इन्हें दरबार में अग्नि जलाने की अनुमति दी।)
 - जैन धर्म = हरिविजय सूरि, जिनचंद्र सूरि
 - ईसाई धर्म = एक्वाबीवा, मोन्सेरात
 - नोट - कोई भी बौद्ध विद्वान इस धर्म संसद में शामिल नहीं था।
- 1579 ई. - मजहर की घोषणा। (शेख मुबारक ने मजहर का प्रारूप तैयार किया।)
- 1582 ई. - दीन-ए-इलाही की स्थापना/तौहिद-ए-इलाही

- अकबर प्रमुख था।
- प्रधान पुरोहित = अबुल फजल
- पवित्र दिन = रविवार
- पवित्र तत्व = प्रकाश

- वहादत-उल-वुजुद विचारों से प्रेरित।
- मात्र 18 लोगों ने इसे अपनाया।
- यह एक आचार संहिता थी।
- इसमें पैगम्बर, पवित्र पुस्तक, पवित्र स्थान विचारधारा का अभाव है।
- इतिहासकार स्मिथ के अनुसार यह अकबर की मूर्खता का प्रतीक है।
- 1583 ई. में अकबर ने 'इलाही संवत्' चलाया।
- अक्टूबर 1605 ई. में अकबर की मृत्यु।

★ सलीम का विद्रोह –

- सलीम ने अकबर के विरुद्ध 2 बार (1599 ई. व 1603 ई.) विद्रोह किया और इलाहाबाद चला गया।

★ अकबर की सामाजिक नीति –

- सती प्रथा को रोकने का प्रयास किया।
- विवाह की आयु निर्धारित की।
- अकबर ने सिखों के चौथे गुरु, गुरु रामदास को 400 बीघा भूमि दान की।
- अकबर ने विठ्ठलनाथ (वल्लभाचार्य के पुत्र) को गोकुल व जैतपुरा की जागीर प्रदान की।

☑ जहाँगीर {1605 - 1627 AD} –

- बचपन का नाम = सलीम (शेखू बाबा)
- माता = हरखा बाई
- पत्नी = मानबाई (मानसिंह की बहिन)
- मानबाई के पुत्र का नाम **खुसरो** था। Most Handsome Prince of the Era
- मानबाई = शाह बेगम के नाम से प्रसिद्ध हुई।
- जहाँगीर की आदतों से परेशान होकर मानबाई ने आत्महत्या कर ली।
- दूसरी पत्नी = जोधा बाई/मानी बाई (जगत गोंसाई के रूप में प्रसिद्ध)
- जोधा बाई का पुत्र **खुर्रम** (शाहजहाँ)
- जहाँगीर ने राज्याभिषेक के समय 12 घोषणाएँ की।
- उसने न्याय की सोने की जंजीर लगवायी जिसमें 60 घंटिया थी।
- तीसरी पत्नी = नूरजहाँ

❖ **खुसरो का विद्रोह 1606 ई. —**

- खुसरो को 'मामा — मानसिंह' व ससुर — मिर्जा अजीज कोका का समर्थन प्राप्त था।
- गुरु अर्जुनदेव जी ने खुसरो को आशीर्वाद प्रदान किया था।
- जिस कारण जहाँगीर ने अर्जुनदेव की हत्या करवा दी, एवं यहां से 'सिक्ख—मुगल संघर्ष' प्रारम्भ हुआ।

❖ **भैरावल का युद्ध 1606 ई. —**

- खुसरो व महावत खां के बीच।
- खुसरो पराजित हुआ एवं उसकी आँखें फोड़ दी गई।
- 1621 ई. में शाहजहाँ ने बुरहानपुर में खुसरो की हत्या करवा दी थी।

❖ **जहाँगीर व यूरोपियन्स —**

- 1608 ई. — कैप्टन हॉकिन्स भारत आया। (हैक्टर नामक जहाज से)
- 1609 ई. — हॉकिन्स आगरा में जहाँगीर से मिला। (फारसी व तुर्की भाषा का ज्ञान था।)
- जहाँगीर ने इसे 400 का मनसब दिया।
- यह तीन साल तक आगरा में रुका परन्तु व्यापारिक रियायतें प्राप्त करने में असफल रहा।
- 1615 ई. — सर टॉमस रो भारत आया।
- 1616 ई. — अजमेर में सर टॉमस रो जहाँगीर से मिला एवं रियायतें प्राप्त करने में सफल।
- 1615 ई. — मुगल—मेवाड़ संधि (खुर्रम ने)
- 1617 ई. — खुर्रम ने अहमदनगर के साथ संधि की।

❑ **नूरजहाँ जुंटा (1611—1622 ई.) —**

- वास्तविक नाम = मेहरुन्निसा
- नूरजहाँ के पति का नाम = अली कुली बेग
- जहाँगीर ने अली कुली बेग को 'शेर—ए—अफगान' की उपाधि दी एवं कालांतर में उसकी हत्या करवा दी।
- जहाँगीर ने मेहरुन्निसा को 'नूर—ए—जहाँ' की उपाधि दी।
- नूरजहाँ जुंटा के अन्य सदस्य —
 - पिता = ग्यासबेग (वजीर)
 - माता = अस्मत बेगम (इसने इत्र का आविष्कार किया)
 - भाई = आसफ खां (वकील)
 - शाहजहाँ
- इस समय सभी शक्तियाँ नूरजहाँ के पास थी।
- नूरजहाँ शाही फरमानों पर हस्ताक्षर करती थी।

- यह झरोखा दर्शन करती थी।
- इसने अपनी बेटी लाडली बेगम का विवाह शहरयार से करवा दिया।
- नूरजहाँ जुंटा में आपसी फूट पड़ गई। (आसफ खां व नूरजहाँ)
- **शाहजहाँ का विद्रोह (दक्कन) 1622 ई. —**
 - महावत खां व परवेज (जहाँगीर का बेटा) ने इसका दमन किया।
- **महावत खां का विद्रोह 1626 ई. —**
 - यह परवेज का समर्थक था।
 - परवेज खां (महावत खां) ने जहाँगीर को बंदी बना लिया।
 - आसफ खां व नूरजहाँ ने महावत खां पर आक्रमण किया परन्तु पराजित हुए।
 - महावत खां ने नूरजहाँ को भी बंदी बना लिया।
- 1627 ई. जहाँगीर की मृत्यु।

नोट —

1. जहाँगीर ने तंबाकू की खेती पर प्रतिबंध लगाया।
2. जहाँगीर ने बंगाल में बच्चों व किन्नरों के व्यापार पर प्रतिबंध लगाया।
3. जहाँगीर प्रथम शासक था जिसने सिक्कों पर अपनी तस्वीर खुदवाई।

☑ **शाहजहाँ (1627–1658 ई.) –**

- शहरयार ने नूरजहाँ की सहायता से स्वयं को लाहौर का बादशाह घोषित किया।
- आसफ खां ने खुसरो के पुत्र दावरबख्श को आगरा में बादशाह घोषित किया।
- शाहजहाँ ने शहरयार, दावरबख्श व मुगल परिवार के सभी पुरुष सदस्यों की हत्या करवा दी।
- दावरबख्श को इतिहास में 'बलि का बकरा' कहा जाता है नूरजहाँ को लाहौर में नजरबंद रखा गया।

☉ **खान –ए–जहाँ लोदी का विद्रोह 1628 ई. –**

- यह मालवा का गवर्नर था।
- शाहजहाँ ने इसे पद से हटा दिया था इसलिए अहमदनगर में इसने विद्रोह कर दिया।

☉ **जुंझार सिंह बुन्देला का विद्रोह 1627–28 ई. –**

- इन्होंने हुगली (पश्चिम बंगाल) में विद्रोह किया।
- शाहजहाँ ने इसका दमन करवाया एवं पुर्तगालियों के सभी धार्मिक स्थानों को नष्ट करवा दिया।
- आगरा के चर्च को तुड़वाया।

☉ **1636 ई. – अमहदनगर का विलय –**

- 1636 ई. – औरंगजेब को दक्कन का गवर्नर नियुक्त

☉ **गोलकुण्डा अभियान –**

- गोलकुण्डा का वजीर = मीर जुमला मुगलों की सेवा में आ गया।
- मीर जुमला ने शाहजहाँ को कोहिनूर भेंट किया।
- 1644 ई. को औरंगजेब जहाँआरा से मिलने आगरा आया।
- शाहजहाँ ने औरंगजेब की दक्कन की सूबेदारी छीन ली।
- शाहजहाँ ने मध्य एशिया का अभियान किया परन्तु असफल रहा।
- 1653 ई. को औरंगजेब को पुनः दक्कन का गवर्नर नियुक्त किया गया।
- औरंगजेब ने मुर्शीद कुली खां की मदद से दक्कन में भू–राजस्व सुधार किए।
- मुर्शीद कुली खां को "दक्कन का टोडरमल" कहा जाता है।
- शाहजहाँ ने संगीतकार खुशहाल खां को दरबार से निकाल दिया था।

☉ **शाहजहाँ की धार्मिक नीति –**

1. धर्मान्तरण विभाग की स्थापना की।
2. मंदिर तुड़वाए।
3. मुस्लिम लड़कियों के हिन्दू लड़कों से विवाह पर प्रतिबंध लगाया।
4. सिजदा व पैबोस प्रथा पर प्रतिबंध लगाया।
5. गौ हत्या से प्रतिबंध हटा लिया।
6. तीर्थ यात्रा कर वापस लगाया।
7. इलाही संवत् पर प्रतिबंध लगाया व हिजरी संवत् प्रारम्भ किया।

★ **उत्तराधिकार संघर्ष (1658–1659 ई.) –**

- शहजहाँ ने दारा को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था।
- **1658 ई. बहादुरपुर का युद्ध –**
 - दारा व शूजा के बीच।
 - सेनापति मिर्जा राजा जयसिंह व सुलेमान शिकोह
 - दारा विजयी हुआ।
- **1658 ई. धरमत का युद्ध –**
 - दारा तथा औरंगजेब और मुराद के बीच
 - सेनापति – जसवंत सिंह व कासिम खां (युद्ध के दौरान निष्क्रिय रहा)
- **1658 ई. सामूगढ़ का युद्ध –**
 - दारा तथा औरंगजेब और मुराद के बीच
 - दारा युद्ध हार गया।
 - इस युद्ध पश्चात् मुराद को बंदी बना दिया गया।
- **1659 ई. खजुआ का युद्ध –**
 - औरंगजेब व शूजा के बीच
 - औरंगजेब युद्ध जीत गया।
 - शूजा भागकर म्यांमार चला गया।
 - अराकानयोमा की पहाड़ियों में शूजा की मृत्यु हो गई।
- **1659 ई. दौराई का युद्ध –**
 - औरंगजेब व दारा के बीच
 - औरंगजेब युद्ध जीत गया।
 - शाहजहाँ को नजरबंद किया गया था।
- **1666 ई. में शाहजहाँ की मृत्यु।**

☑ **दारा शिकोह –**

- दारा एक सहिष्णु व्यक्ति था।
- उसके अनुसार हिन्दू धर्म तथा इस्लाम धर्म एक ही ईश्वर को पाने के अलग-अलग रास्ते हैं।
- दारा ने भगवद् गीता व योग वशिष्ठ का फारसी में अनुवाद किया।
- इसने 52 उपनिषदों का फारसी में अनुवाद किया व उसका नाम **सिर-ए-अकबर** रखा।
- हिन्दू-मुस्लिम एकता का समर्थन किया।

• **दारा की पुस्तकें –**

1. मज्म-उल-बहरीन = फारसी भाषा (अर्थ – दो महासागरों का मिलन)
2. सफीनत-उल-औलिया
3. सकीनत-उल-औलिया
4. रिसाला-ए-हकनुमा
5. हसनात-ए-आरफीन
6. तरीकत-उल-हकीकत

- दारा को हुमायूँ के मकबरे में दफनाया गया।

☑ **औरंगजेब (1658 –1707 ई.) –**

- बचपन – नूरजहाँ के पास बीता।
- यह धार्मिक प्रवृत्ति का था।
- यह कुरान की प्रतियाँ लिखता था।
- इसे कुरान कण्ठस्थ थी इसलिए इसे हाफिज कहा जाता था।
- इसे **शाही दरवेश** एवं **जिंदा पीर** कहा जाता था।
- इसका दो बार राज्याभिषेक हुआ – आगरा (1659), दिल्ली (1660)

❖ **प्रमुख विद्रोह –**

★ **क्षत्रसाल बुंदेला का विद्रोह –**

- इसे चंपतराय ने आरंभ किया।
- क्षत्रसाल ने इसे जारी रखा।
- बुंदेलों की राजधानी – ओरछा।
- ओरछा इमारतें – राजाराम मंदिर, चतुर्भुज मंदिर, शारदा मंदिर, जहाँगीर का महल, लक्ष्मीनारायण मंदिर इत्यादि।

★ **सतनामी विद्रोह –**

- केद्र – नारनौल (हरियाणा) में था।
- इसे मुण्डिया विद्रोह भी कहा जाता है।
- सतनामी संप्रदाय का प्रभाव हरियाणा व राजस्थान के कुछ भागों में था।

★ **मारवाड़ का विद्रोह –**

- इसे 30 वर्षीय संघर्ष {1678-1708 AD} कहा जाता है।

★ **जाट किसानों का विद्रोह –**

★ **उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांत का जनजातीय विद्रोह –**

- यहाँ रोशनियाँ संप्रदाय का प्रभाव था।

★ **सिक्ख विद्रोह –**

- औरंगजेब ने 9वें सिक्ख गुरु तेग बहादुर को मृत्युदण्ड दे दिया था।
- तेग बहादुर जी के बारे में कहा जाता है – “सिर दे दिया लेकिन सार नहीं”

★ **अकबर का विद्रोह –**

- अकबर ने नाडोल (पाली) में विद्रोह किया।
- अजमेर के पास औरंगजेब व अकबर की सेना का सामना हुआ।
- औरंगजेब ने अकबर का पीछा किया एवं अपनी दक्कन नीति को जारी रखा।
- 1686 ई. में बीजापुर व 1687 ई. में गोलकुण्डा का अभियान व इनका विलय मुगल साम्राज्य में किया।
- अकबर भागकर फारस चला गया तथा वहां उसकी मृत्यु हो गई।

❖ **प्रमुख अभियान –**

★ **अहोम अभियान –**

- औरंगजेब मीर जुमला को बंगाल का गवर्नर नियुक्त करता है।
- अहोम की राजधानी – कामरूप
- मीर जुमला ईरान का व्यापारी था।
- मीर जुमला ने अहोम के विरुद्ध अभियान चलाया लेकिन वह लड़ता हुआ मारा गया।
- इसने आरंभ में गोलकुण्डा के शासक को अपनी सेवाएँ दी कालान्तर में शाइस्ता खां को बंगाल का गवर्नर नियुक्त किया गया।
- अहोम सेनापति लंचीत बोरफूकन ने मुगल सेना को बुरी तरह पराजित किया। (सराय घाट का युद्ध – 1671 ई.)

★ **दक्कन अभियान –**

- औरंगजेब ने शाइस्ता खां को दक्कन का गवर्नर नियुक्त किया।
- आरंभ में शाइस्ता ने शिवाजी को पराजित किया।
- 1663 ई. में शिवाजी ने पुणे पर आक्रमण किया व शाइस्ता खां को पराजित किया।
- शाइस्ता खां भाग गया एवं शिवाजी ने इसकी अंगुलिया काट दी।
- औरंगजेब ने जयसिंह को दक्कन का गवर्नर नियुक्त किया।
- जयसिंह ने पुरन्दर की संधि की।

★ **धार्मिक नीति –**

- औरंगजेब धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति था।
- वह नूरजहाँ से काफी प्रभावित था।
- वह कुरान की प्रतिलिपियाँ बनाता था।

- औरंगजेब ने जजिया कर पुनः लागू किया।
- इसने सिक्कों पर कलमा खुदवाना बंद करवाया।
- इसने ईरानी परम्पराओं पर प्रतिबंध लगाया जैसे – तुलादान, झरोखा, नवरोज, ताजिया।
- इसने तिलक प्रथा पर प्रतिबंध लगाया।
- इसने सती प्रथा पर प्रतिबंध लगाया।
- महिलाओं के मजारों पर प्रवेश पर रोक ला दी।
- इसने मुहत्तसिब नामक अधिकारी की नियुक्ति की जो मुसलमानों के धार्मिक व नैतिक आचरण की देखरेख करता था।
- इसने हिन्दू मंदिरों को भारी नुकसान पहुंचाया।

मुगलकालीन स्थापत्य कला

- मुगलकाल में इण्डो-इस्लामिक शैली का विकास हुआ।

1. बाबर –

- पानीपत की ईंटों की मस्जिद।
 - संभल की मस्जिद
 - आगरा की मस्जिद
- आराम बाग – आगरा, बाबर को आरंभ में यहीं दफनाया गया था। कालांतर में इसके शव को काबुल भेजा गया।

2. हुमायूँ –

- दीनपनाह नगर – दिल्ली
- यहां शेरमण्डल का पुस्तकालय था।

3. अकबर –

- हुमायूँ का मकबरा – दिल्ली
 - निर्माण – हाजी बेगम ने करवाया।
 - वास्तुकार – मिरजा ग्यासबेग।
 - यह यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साइट है।
 - विशेषताएँ –
 - चारबाग शैली
 - चार दीवारी
 - सममिति
 - लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग
 - फारसी स्थापत्य कला का प्रभाव

- दोहरा गुम्बद – मुगलकालीन प्रथम इमारत जिस पर दोहरे गुम्बद का निर्माण।
 - मीनारें मुख्य इमारतों से जुड़ी हुई हैं।
- **फतेहपुर सीकरी –**
 - यह एक शाही परिसर है जिसमें बहुत सी इमारतों का निर्माण किया गया है।
 - वास्तुकार – बहाउद्दीन
 - महत्पूर्ण इमारतें –
 - दीवान-ए-आम
 - दीवान-ए-खास (इसमें एक 'विश्व वृक्ष' स्थित है।)
 - खास महल – इसका प्रयोग झरोखा दर्शन के लिए।
 - जयोतिष की बैठक।
 - तुर्की सुल्ताना की कोठी – सीकरी का सबसे सुन्दर अलंकरण यहां किया गया है।
 - ख्वाबगाह – अकबर का शयनकक्ष (सबसे साधारण इमारत)
 - मरियम उज्जमानी का महल – इसमें भित्ति चित्र मिलते हैं।
 - बीरबल का महल – इस पर हिन्दू प्रभाव दिखता है।
 - जोधाबाई का महल – सीकरी के शाही परिसर की सबसे बड़ी इमारत।
 - **पंचमहल –**
 - ★ बौद्ध शैली में निर्मित
 - ★ यह पाँच मंजिला पिरामिडाकार इमारत है।
 - ★ यह दीवार रहित इमारत स्तंभों पर टिकी हुई है।
 - ★ इसे सीकरी का हवामहल भी कहा जाता है।
- **जामा मस्जिद –**
 - इसका दरवाजा बुलन्द दरवाजा है।
 - इसमें सूफी संत शेख सलीम चिश्ती की मजार है।
 - इसमें इस्लाम खान की कब्र है।
- **हिरण मीनार –** यह हाथी स्मारक है।
- **आगरा का किला –**
 - निर्माण बादलगढ़ के खण्डहरों पर करवाया गया।
 - इसमें दो द्वार हैं – अमर सिंह द्वार, दिल्ली द्वार।
 - प्रमुख इमारतें –
 1. जोधाबाई का महल – शाही परिसर की सबसे बड़ी इमारत
 2. जहाँगीरी महल –
 - ग्वालियर के मान मंदिर महल से प्राप्त।
 - यह शहतीर/धरणी शैली में बना है।

- अजमेर का किला (मैग्जीन फोर्ट) –
- इलाहबाद का किला

4. जहाँगीर –

1. अकबर का मकबरा –
 - सिकन्दरा (आगरा)
 - गुम्बद विहीन इमारत है।
 - यह 5 मंजिला इमारत है।
 - इसमें स्वतंत्र मीनारों का निर्माण किया गया है।
2. मरियम उज्जमानी का मकबरा – सिकन्दरा
3. अब्दुल रहिम खान खाना का मकबरा – दिल्ली
4. एतमाद्-उल्-दौला का मकबरा।
 - प्रथम बार **पित्राड्यूरा** का कार्य
 - बेबी ताज भी कहा जाता है।
 - अस्मत बेगम की कब्र स्थित।

5. शाहजहाँ –

- शाहजहाँ का काल स्थापत्य कला का स्वर्णकाल है।
 - शाहजहाँ के समय पर्णिल मेहराब व अलंकृत मेहराब बनना आरंभ हो गए।
 - शाहजहाँ के समय सफेद संगमरमर का प्रयोग अधिक मात्रा में हुआ।
1. ताजमहल –
 - हिन्दू-इस्लामिक शैली का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।
 - अंग्रेजी इतिहासकारों के अनुसार एरोनियो व वेरोनियो इसके वास्तुकार थे।
 - मुख्य वास्तुकार – उस्ताद अहमद लाहौरी
 - इशाखा की देखरेख में इसका निर्माण पूर्ण हुआ।
 - विशेषताएँ –
 - चार बाग
 - चार दीवारी
 - सममिति
 - कुन्डाकार दोहरा गुम्बद
 - पित्राड्यूरा का प्रयोग
 - संगमरमर की जालियाँ

2. आगरा फोर्ट की इमारतें –

1. खास महल
2. दीवान-ए-खास
3. जहाँआरा ने जामा मस्जिद (आगरा) का निर्माण करवाया।
4. मोती मस्जिद (आगरा)
5. लाल किला – दिल्ली, हमीद व अहमद वास्तुकार।
6. जामा मस्जिद – दिल्ली
7. चांदनी चौक का प्रारूप शाहजहाँ की बेटी जहाँआरा ने बनाया था।
8. शाहजहाँ ने मयूर सिंहासन (तख्त के ताउस) बनवाया था जिसका कलाकार – बेबादल खां था।

6. औरंगजेब –

1. बीबी का मकबरा = औरंगाबाद
 - यह राबिया-उद-दुर्रानी का मकबरा है।
 - इसे दक्षिण भारत का ताजमहल कहा जाता है।
 - यह ताजमहल की फूहड़ नकल है।
2. बादशाही मस्जिद – लाहौर
3. मोती मस्जिद – दिल्ली
4. सफदरजंग का मकबरा = 1754 ई. = दिल्ली। (इसमें तिहरा गुम्बद है।)
मुगल बादशाह अहमद शाह द्वारा निर्मित।

मुगलकालीन शिक्षा व साहित्य

★ शिक्षा –

- बाबर ने एक विभाग की स्थापना की जो शिक्षा के केंद्रों का निर्माण करवाता था – शुहरत-ए-आम
- हुमायूँ एक विद्वान शासक था। शेरमण्डल पुस्तकालय का निर्माण करवाया।
- हुमायूँ ने महाम अनगा की सहायता से 'मदरसा'ए-बेगम' की स्थापना दिल्ली में की।
- अकबर ने अनुवाद विभाग की स्थापना की।
- फैजी ने बदायूनी व नकीब खां की सहायता से रामायण व महाभारत (रज्मनामा) का फारसी में अनुवाद किया।
- राजा टोडरमल ने भागवत पुराण का फारसी में अनुवाद किया।
- अबुल फजल ने पंचतंत्र (अनवार-ए-सुहेली) एवं कालिया दमन का फारसी अनुवाद किया।

- मुगलों की मातृभाषा = तुर्की एवं धार्मिक भाषा = अरबी।
- मुगलकाल में प्राथमिक शिक्षा केंद्र = मकतब एवं उच्च शिक्षा केंद्र = मदरसा।
- दारा शिकोह का योगदान –
- औरंगजेब ने मदरसों की सहायता से हिन्दू विद्यालयों को बंद करवाने का प्रयास किया।
- औरंगजेब की बेटी जेबुन्निसा ने बेतुल-उल-उलूम नामक पुस्तकालय व विद्यालय का निर्माण करवाया।
- विदुषी महिलाएँ –
 - ✓ गुलबदन बेगम
 - ✓ महामअनगा
 - ✓ नूरजहाँ
 - ✓ अर्जुमन्द बानो बेगम (मुमताज महल)
 - ✓ जहाँआरा
 - ✓ जेबुन्निसा

★ साहित्य –

1. बाबर –

- | | | |
|---------------|---|------------------|
| 1. बाबरनामा | } | तुर्की भाषा में। |
| 2. दीवान | | |
| 3. खत-ए-बाबरी | | |

2. हुमायूँ –

1. गुलबदन बेगम – हुमायूँनामा
2. जौहर आफताबची – तजकिरात-उल-वाकयात
3. खोंद मीर/अमीर – कानून-ए-हुमायूँनी
4. मिर्जा हैदर दौगलत – तारीख-ए-रशीदी

3. अकबर –

1. फैजी सरहिन्दी – अकबरनामा
2. अबुल फजल –
 - अकबरनामा प्रथम
 - अकबरनामा द्वितीय
 - आइन-ए-अकबरी = इसमें अबुल फजल की भी आत्मकथा मिलती है।
 - इंशा – अकबर = अकबर के पत्रों का संकलन।
3. आरिफ कंधारी – तारीख-ए-अकबरी
4. वायजीद बयाद – तजकिरा-ए-हुमायूँ, तजकिरा-ए-अकबर

5. अब्दुल कादिर बदायूनी – मुन्तखब-उत-तवारीख

- इसे 'भारत का आम इतिहास' कहा जाता है।
- बदायूनी ने अकबर की धार्मिक नीति की आलोचना की है।
- इसमें हल्दीघाटी युद्ध का उल्लेख किया गया है।
- इसमें सूफी संतों की जीवनियाँ मिलती हैं।

6. अब्बास खां शेरवानी – तारीख-ए-अकबरी / तोहफा-ए-अकबरशाही।

7. निजामुद्दीन अहमद – तबकात-ए-अकबरी

8. अहमद यादगार – तारीख-ए-शाही

9. रिजकुल्लाह मुस्ताकी – वाकयात-ए-मुस्ताकी

4. जहाँगीर –

1. जहाँगीर व मोतमिद खां व मोहम्मद हादी – तुजुक-ए-जहाँगीरी (जहाँगीर की आत्मकथा)
(जहाँगीर के आरंभिक 16 वर्षों का वर्णन)
2. मोतमिद खां – इकबालनामा-ए-जहाँगीरी

5. शाहजहाँ –

1. मोहम्मद अमीन कजवीनी – पादशाहनामा प्रथम
2. अब्दुल हमीद लाहौरी – पादशाहनामा द्वितीय
3. मुहम्मद वारीस – पादशाहनामा तृतीय
4. इनायत खां – शाहजहाँनामा
5. चन्द्रभान – चहार चमन

6. औरंगजेब –

1. काजिम सिराजी – आलमगीर नामा
2. आकिल खां – वाकयात-ए-आलमगीरी
3. भीमसेन सक्सेना – नुस्खा-ए-दिलखुशा
4. ईश्वरदास नागर – फुतुहात-ए-आलमगीर
5. सुरजनराय भण्डारी – खुलासत-उत-तवारीख
6. कानूनों का संकलन – फतवा-ए-आलमगीर
7. खाफी खां – मुन्तखब-उल-लुबाब

मुगलकालीन संगीत

- मुगलकालीन संगीत का वास्तविक विकास अकबर के समय हुआ।
- अबुल फजल के अनुसार अकबर के दरबार में 36 संगीतकार थे।
- अकबर के समय 'ध्रुपद गायिकी' का विकास हुआ जिसमें विशेष योगदान तानसेन का था।
- तानसेन ने राग-रागिनियों की रचना की –
 - मियां की मल्हार
 - मियां की टोडी
 - मियां की सारंग
 - दरबारी कान्हड़ा
- अकबर के दरबार में गोपाल, बाजबहादुर, बेजुबख्श प्रसिद्ध संगीतकार थे।
- हरिदास जी, तुलसीदास जी, सूरदास जी अकबर के समकालीन थे।
(ग्वालियर के राजा मानसिंह तंवर ने ध्रुपदगायिकी आरंभ की।)
- जहाँगीर के दरबार में हमजान व मुक्तु प्रमुख संगीतकार थे।
- शौकी एक गजल गायक था। जहाँगीर ने इसे आनन्द खां की उपाधि दी।
- शाहजहाँ संगीत गोष्ठियों का आयोजन करवाता था।
- **शाहजहाँ काल में प्रमुख संगीतकार –**
 1. लाल खां कलावन्त – उपाधि = गुणसमुद्र
 2. खुशहाल खां
 3. विलास खां
- औरंगजेब ने संगीतकारों को दरबार से निकाल दिया।
- संगीतकारों ने संगीत का जनाजा निकाला।
- संगीत पर सर्वाधिक पुस्तकें औरंगजेब के समय लिखी गई।
- औरंगजेब स्वयं वीणा व नगाड़ा बजाता था।

मुगलकालीन चित्रकला

1. बाबर —

- बाबर ने अपनी आत्मकथा बाबरनामा में हैरात के लिए पसिद्ध चित्रकार बिहजाद के नाम का उल्लेख किया है।
- यह उसकी चित्रकला में रुचि को दर्शाता है।

2. हुमायूँ —

- हुमायूँ ने फारस के 2 चित्रकारों को संरक्षण प्रदान किया।
 1. मीर सैय्यद अली तबरीजी
 - उपाधि = नादिर-उल-अस्त्र
 2. अब्दु सम्मद
 - उपाधि = शीरी कलम
 - अकबर ने अब्दु सम्मद को टकसाल का अधिकारी नियुक्त किया।
 - इस समय 'हमजानामा' का चित्रण किया।

3. अकबर —

- अबुल फजल के अनुसार अकबर के दरबार में 17 चित्रकार थे।
 1. दसवन्त —
 - सबसे प्रमुख चित्रकार
 - यह कहार जाति का था
 - यह पागल हो गया व आत्महत्या कर ली।
 - इसके चित्र रज्मनामा में मिलते हैं।
 2. बसावन — घोड़े के साथ मजनू का चित्र प्रसिद्ध है।
 3. मिशकिन — इसके चित्रों पर यूरोपीय प्रभाव दिखाई देता है।
- विशेषताएँ —
 - इस समय लाल, पीले व नीले रंग का प्रयोग होता है।
 - पहले केवल हरे रंग का प्रयोग होता था।
 - गोल ब्रश का प्रयोग आरंभ होग गया था।
 - इस समय रज्मनामा, तूतीनामा व खानदान ऐ तैमुरिया का चित्रण किया गया।
 - भित्ति चित्रण आरंभ हुआ।

4. जहाँगीर –

- चित्रकला का स्वर्णकाल
- तजुक-ए-जहाँगीरी के अनुसार जहाँगीर स्वयं एक अच्छा चित्रकार था।
- इसने आगारिजा खां के नेतृत्व में आगरा में चित्रशाला का निर्माण करवाया।
- **प्रमुख चित्रकार –**
 1. उस्ताद मनसूर –
 - उपाधि = नादिर-उल-अस्त्र
 - यह प्रकृति चित्रण में निपुण था।
 - प्रमुख चित्र – सायबेरियन सारस, बंगाल का अनोखा पुष्प
 2. अबुल हसन –
 - इसने तुजुक-ए-जहाँगीरी का मुख्य पृष्ठ चित्रित किया।
 - एक असंख्य गिलहरियों का चित्र मिलता है जो लंदन के संग्रहालय में रखा है।
 3. बिशनदास – फारस का शाह व उसके परिवार के छवि चित्र बनाए।
 4. दौलत – छवि चित्रण में निपुण।
 5. फारुख बेग – बीजापुर शासक के छवि चित्र बनाए।
 6. मनोहर – बसावन का पुत्र (जहाँगीर अपनी आत्मकथा में इसका उल्लेख नहीं करता)
- **विशेषताएँ –**
 - इस समय प्रकृति चित्रण एवं युद्ध-दृश्यों के चित्रों पर अधिक बल दिया गया।
 - ईरानी प्रभाव समाप्त हो गया।
 - भारतीय प्रभाव बढ़ गया।
 - यूरोपीय प्रभाव भी बढ़ गया।
 - हाशिया छोड़ना आरंभ हुआ।
 - मोरक्को चित्रण आरंभ हुआ।

5. शाहजहाँ –

- इसकी चित्रकला में अधिक रुचि नहीं थी।
- इस समय चटकीले रंगों का प्रयोग आरंभ हुआ।
- देवीय चित्रण किया गया।
- प्रमुख चित्रकार – फकीर अल्लाह, हासिम खां, मुरार

6. औरंगजेब –

- इसने चित्रकला पर प्रतिबंध लगा दिया।
- अकबर के मकबरे पर बने चित्रों को पुतवा दिया।

मुगलकालीन प्रशासनिक व्यवस्था

☑ **बादशाह —**

- केंद्रीकृत, निरंकुश, राजतंत्रात्मक व वंशानुगत शासन व्यवस्था थी।
- राजत्व के दैवीय सिद्धांत को मानते थे।
- अबुल फजल ने बादशाह को फर्र-ए-एजदी (ईश्वर का प्रकाश) कहा है।
- अकबर ने एक नए पद का सृजन किया = दीवान-ए-वजारत-ए-कुल

☑ **दीवान/वजीर = वित्तमंत्री**

1. दीवान-ए-जागीर
2. दीवान-ए-खालसा
3. दीवान-ए-वयुतात = कारखाना अधीक्षक
4. दीवान-ए-तन = वेतन विभाग
5. दीवान-ए-तबजीह = सैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता था।
6. दीवान-ए-सादात = धार्मिक मामलों का प्रमुख
7. मुशरिफ = महालेखाकार
8. मुस्तौफी = महालेखा परीक्षक

☑ **वकील —**

- यह शक्तिशाली पद था।
- बेहराम खां अकबर का वकील था।
- महामअनगा भी वकील के पद पर रही थी।
- शाहजहाँ ने इस पद को समाप्त किया।

☑ मीर-ए-बख्शी = रक्षामंत्री (सेना की भर्ती व सरखत नामक दस्तावेज पर हस्ताक्षर करता)

☑ मीर-ए-खानसामा = शाही राजमहल की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करता था।

☑ काजी/सद्र = न्यायाधीश/धार्मिक मामलों का प्रमुख।

☑ मुहतसिब = औरंगजेब ने इसकी नियुक्ति की थी।

☑ मीर-ए-बर् = वन विभाग का प्रमुख

☑ मीर-ए-वहर = नौसेना का प्रमुख

☑ मीर-ए-आतिश = बारूदखाने का प्रमुख

☑ मीर-ए-अर्ज = याचिका विभाग का प्रमुख

☑ दरोगा-ए-डोकचौकी = गुप्तचर विभाग एवं डाक विभाग का प्रमुख।

☑ खुफियानवीस

☑ वाकियानवीस

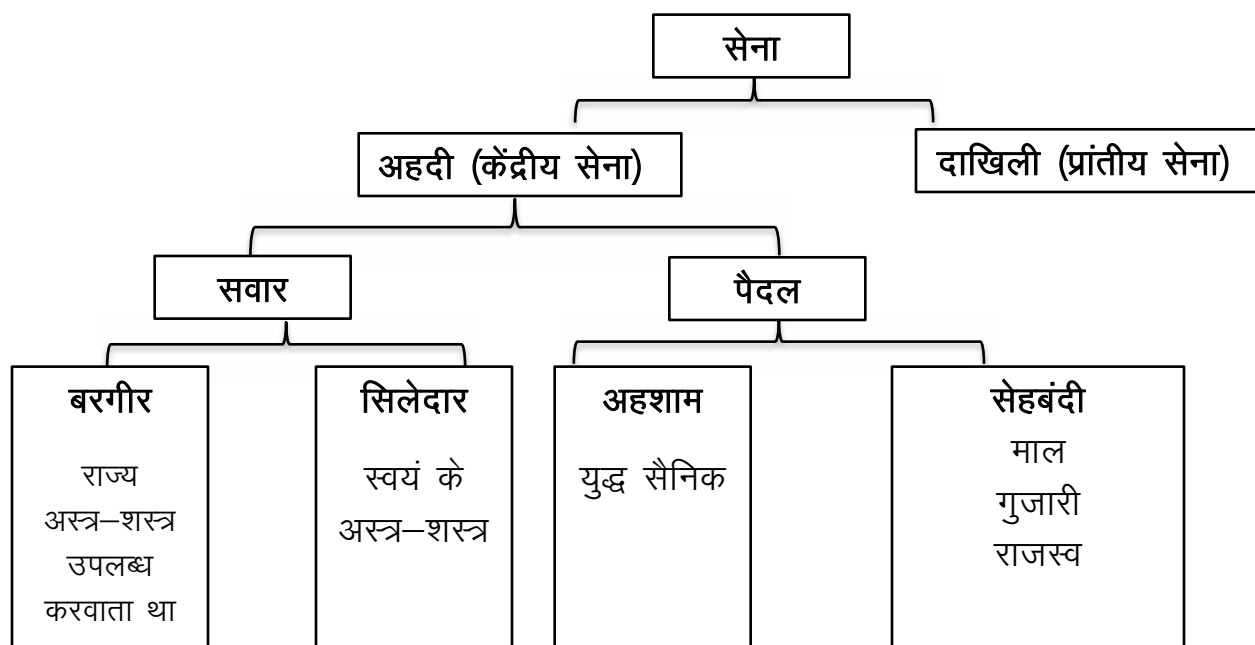
☑ हरकारा

} = गुप्तचर व संदेशवाहक

☑ **प्रांतीय प्रशासन –**

- अकबर के काल में 12 प्रांत थे बाद में 15 हो गए।
- शाहजहाँ के समय 18 प्रांत थे।
- औरंगजेब के समय 20 प्रांत थे।
- प्रमुख प्रांत –
 - सूबेदार = प्रशासनिक प्रमुख
 - दीवान = राजस्व प्रमुख
 - बख्शी = सैन्य प्रमुख
 - काजी = न्यायाधीश
- सरकार –
 - फौजदार = प्रशासनिक व सैन्य प्रमुख
 - आमिल गुजार = राजस्व प्रमुख
- परगना = सरकारों का विभाजन के लिए।
 - शिकदार = प्रशासनिक
 - आमिल = राजस्व अधिकारी (वित्तिकची/वित्तीय अधिकारी)
 - कानूनगो = पटवारियों का प्रमुख
- गाँव = चौधरी/खुत/मुक्कदम/महत्तर
- शाहजहाँ ने परगना व सरकार के बीच एक 'चकला' नामक इकाई की स्थापना की।

☑ **सैन्य प्रशासन –**



★ **तोपखाना –**

1. दोस्ती – हल्की तोपें
2. जिन्सी – भारी तोपें

• **तोपों के प्रकार =**

- नरनाल
- गजनाल
- शूतरनाल (ऊँटों के सहयोग से)

• **पत्थर फेंकने के हथियार –**

- अर्राट
- मंजनिक
- गुल्लेल

☑ **राजस्व व्यवस्था –**

- राजस्व का प्रमुख स्रोत भू-राजस्व होता था।
- अकबर ने भूमि की पैमाइश करवाई एवं उसने इलाही गज का प्रयोग किया।
- भूमि को चार भागों में विभाजित किया – पोजल, परती, चचर, बंजर।
- प्रत्येक भाग को पुनः तीन भागों में विभाजित किया – उत्तम, मध्यम, निम्न।
- 1580 ई. में अकबर के आईन-ए-दहशाला पद्धति को लागू किया।
- अकबर ने बंदोस्त प्रणाली को अपनाया।
- कालांतर/औरंगजेब के समय इजारेदारी व्यवस्था प्रसिद्ध हुई।

☑ **मनसबदारी व्यवस्था –**

- अकबर ने मनसबदारी व्यवस्था मंगोलों (उजबेकों) से ग्रहण की।
- अकबर ने सभी अधिकारियों को मनसब प्रदान किए।
- मनसबदारी व्यवस्था दशमलव पद्धति पर आधारित थी।
- सबसे छोटा मनसब = 10
- सबसे बड़ा मनसब = 10,000
- 5,000 से अधिक का मनसब केवल शाही परिवार के सदस्यों को दिया जाता था।
- अपवाद –

1. मानसिंह	=	7,000
2. मिर्जा अजीज कोका	=	7,000
3. जहाँगीर	=	12,000
- 10–500 = मनसबदार
- 500–2500 = अमीर
- 2500 से अधिक = अमीर-ए-आजम/उमरा
- 1593 ई. में मनसब को दो भागों में विभाजित किया गया।

1. जात = पद व वेतन की जानकारी।
2. सवार = सैनिक संख्या।
- सवार पद जात पद से अधिक नहीं हो सकता था।
- जहाँगीर के समय दु-अस्पा (दुगुने घोड़े) व सी-अस्पा (तिगुने घोड़े) का प्रचलन आरंभ हुआ।
- औरंगजेब के समय मशरूत का प्रयोग बढ़ गया था।

★ अमीर वर्ग –

1. अरब
2. तुरानी
3. अफगान
4. मराठा – जहाँगीर के समय अमीर वर्ग में शामिल।
5. शेखजादे – भारतीय अमीर
6. खानजादे – अमीरों के पुत्र

★ किसान वर्ग –

- | | | |
|--------------|---|--------------------|
| 1. खुदकास्त | = | खुद की जमीन |
| 2. पाहीकास्त | = | अन्य की जमीन |
| 3. मुजारियम | = | खुद व अन्य की जमीन |

नोट –

1. राजमिता कानून = मनसबदार की मृत्यु के पश्चात् उसकी संपत्ति को सीज कर दिया जाता था।
2. अलतमगा जागीर = जहाँगीर के समय वंशानुगत रूप से दी जाने वाली जागीर।
3. पैबाकी/पायबाकी = जागीर देने हेतु रखी गयी आरक्षित भूमि।
4. सयुरगल/मदद-ए-माशा = धार्मिक अनुदान में दी जाने वाली भूमि।
 1. एम्मा – व्यक्तिगत अनुदान।
 2. वक्फ – समाज को दिया जाने वाला अनुदान।

बहमनी साम्राज्य

- संस्थापक = अमीरान-ए-सादाह / सादा
- इब्नबतूता ने अपनी पुस्तक 'रहेला' में अमीरान-ए-सादाह का उल्लेख किया है।
- अमीरान-ए-सादाह ने इस्माइल मुख को अपना नेता चुना।
- इस्माइल मुख ने हसन / जफर को शासक बनाया।
- राजधानी = गुलबर्गा

1. फिरोज –

- यह एक विद्वान शासक था।
- भीमा नदी के तट पर फिरोजाबाद शहर बसाया।

2. अहमद –

- यह वली अहमद व संत अहमद के रूप में प्रसिद्ध था।
- इसने बीदर को अपनी राजधानी बनाया।

3. हुमायूँ –

- यह एक जालिम, क्रूर शासक था।
- इसे 'दक्कन का नीरो' कहा जाता है।
- हर्ष को 'कश्मीर का नीरो' कहा जाता है।

4. मोहम्मद तृतीय –

- इसका वजीर महमूद गंवा था।
- गंवा ने बहमनी साम्राज्य को शक्तिशाली बनाया।
- गंवा ने विजयनगर से गोवा को जीत लिया था।
- यह बहमनी साम्राज्य का स्वर्णकाल था।
- गंवा ने बीदर को शिक्षा के केंद्र के रूप में विकसित किया एवं विश्व विद्यालय का निर्माण करवाया।
- गंवा पड़ोसी राज्यों से पत्राचार करता था।
- पत्रों का संकलन – रिजायुल इंशा
- गंवा षड्यंत्र का शिकार हुआ एवं मुहम्मद ने उसे मृत्युदण्ड दिया।

5. मुहम्मद –

- सभी आर्थिक शक्तियों पर अमीर अली बरीद का अधिकार था।
- अमीर अली बरीद को 'दक्कन की लोमड़ी' कहा जाता है।
- बहमनी साम्राज्य 5 भागों में विभाजित हो गया।

भाग	संस्थापक	वंश
बरार	फतहउल्लहा इमादशाह	इमादशाही
बीजापुर	युसुफ आदिलशाह	आदिलशाही
अहमदनगर	मलिक अहमद निजाम	निजामशाही
गोलकुंडा	कुली कुतुबशाह	कुतुबशाही
बीदर	अमीर अली बरीद	बरीदशाही

1. बरार = अहमदनगर को बरार ने हड़प लिया था।
2. बीजापुर = 1686 ई. में औरंगजेब ने बीजापुर को मुगल साम्राज्य में विलय कर लिया।
संस्थापक = युसुफ व इब्राहिम आदिलशाह।

☑ इब्राहिम आदिलशाह द्वितीय –

- यह जगतगुरु एवं अबला बाबा के नाम से प्रसिद्ध था।
- इसकी पुस्तक = किताब-ए-नौरस।
- नौरसपुर नामक शहर बसाया।
- फरिश्ता इसके समकालीन था।
- पुस्तक = तारीख-ए-फरिश्ता।
- इसने बीजापुर में 'इब्राहिम का रोजा' का निर्माण करवाया।

☑ मोहम्मद आदिशाह –

- बीजापुर में स्वयं के मकबरे का निर्माण करवाया जिसे गोल गुम्बद कहा जाता था।
- मध्यकालीन भारत का सबसे बड़ा गुम्बद।

3. अहमदनगर –

- अकबर के समय संघर्ष हुआ।
- चाँदबीबी के नेतृत्व में मुगल सेना से संघर्ष हुआ।
- चाँदबीबी ने बरार क्षेत्र को अकबर को सौंप कर संधि कर ली।
- मलिक अम्बर यहां का महत्वपूर्ण शासक था।
- 1636 ई. में शाहजहाँ ने अहमदनगर का मुगल साम्राज्य में विलय कर दिया।

4. गोलकुण्डा –

- संस्थापक = कुली कुतुबशाह
- इसने हैदराबाद शहर बसाया। (हैदराबाद का प्रचीन नाम – हदयनगर)
- इसने चारमीनार (हैदराबाद) का निर्माण करवाया।
- इसे 'दक्कनी उर्दू' का जन्मदाता कहा जाता है।
- 1687 ई. में औरंगजेब ने गोलकुण्डा का मुगल साम्राज्य में विलय कर लिया।
- इससे पहले मदन्ना व अकन्ना से समझौता कर शिवाजी ने दक्षिणी भारत पर आक्रमण किया था।

मराठा साम्राज्य

1. शिवाजी –

- जन्म = 1627 ई. शिवनेर दुर्ग, पुणे
- पिता = शाहजी भोंसले
- माता = जीजा बाई
- अहमदनगर की सेवा में थे।
- पूना इन्हें जागीर में प्राप्त था।
- शिवाजी के जीवन पर सर्वाधिक प्रभाव जीजाबाई का था।
- राजनीतिक गुरु = दादा कोणदेव/कोण्डदेव
- राजनीति की शिक्षा दादा कोणदेव से ग्रहण की।
- प्रशासनिक अनुभव पूना से प्राप्त किया।
- धार्मिक गुरु – समर्थ गुरु रामदास
- 1646 ई. – तौरण के किले को विजित किया।
- 1656 ई. – रायगढ़ को राजधानी बनाया।
- 1659 ई. – अफजल खां की हत्या।
- 1663 ई. – मुगल गवर्नर शाइस्ता खां को पराजित किया।
- 1664 ई. – शिवाजी ने सूरत पर आक्रमण किया व लूट लिया।
- 1665 ई. – पुरन्दर की संधि।
- 1670 ई. – सूरत पर दूसरा आक्रमण।
- 1674 ई. – राज्याभिषेक।
- बनारस के प्रसिद्ध ब्राह्मण गंगाभट्ट को आमंत्रित किया।
- शिवाजी का संबंध मेवाड़ के सिसोदिया गांव से था।
- शिवाजी ने छत्रपति, गोप्रतिपालक, ब्राह्मणप्रतिपालक, हिन्दू उद्धारक की उपाधि धारण की।
- राज्याभिषेक के 12 दिन पश्चात् जीजाबाई की मृत्यु हो गई।
- शिवाजी ने दूसरा राज्याभिषेक तांत्रिक विधि से करवाया।
- 1680 ई. में शिवाजी की मृत्यु हो गई।

2. छत्रपति शम्भाजी (1680–89 ई.) – संगमेश्वर नामक स्थान पर मुगल सेना ने इन्हें पकड़ लिया।

3. राजाराम (1689–1700 ई.) –

4. ताराबाई (1700–1707 ई.) –

☑ शिवाजी के अष्टप्रधान = 1674 ई. –

- | | | |
|-----------------------|---|---------------------------|
| 1. पेशवा | = | प्रधानमंत्री |
| 2. अमात्य / मजूमदार | = | वित्तमंत्री |
| 3. सुमन्त / दबीर | = | विदेश मंत्री |
| 4. वाकियानवीस | = | गृह मंत्री |
| 5. शुरुनवीर / चीटनवीस | = | पत्राचार मंत्री |
| 6. सर-ए-नौबत | = | प्रधान सेनापति |
| 7. पंडित राव | = | धार्मिक मामलों का प्रमुख। |
| 8. न्यायाधीश | = | |
- अन्नो जी दत्तो ने महाराष्ट्र (दक्कन) में भू-राजस्व सुधार किए।
(सरदेशमुखी = भू-राजस्व कर 1/10)
 - चौथ – पड़ोसी राज्यों से वसूला जाने वाला कर (1/4)
 - मुगल सेना ने छत्रपति शम्भाजी की हत्या कर दी थी।

☑ मराठा साम्राज्य के उद्भव के कारण –

1. दक्कन अनुपजाऊ क्षेत्र था, वहां व्यापार, वाणिज्य का भी अभाव था।
2. मराठों की अर्थव्यवस्था लूट आधारित थी।
3. मराठों ने बीजापुर में सैनिक के रूप में कार्य किया।
4. बीजापुर, अहमदनगर, गोलकुण्डा से प्रशासनिक अनुभव प्राप्त किए।
5. मराठों ने मराठी भाषा व संस्कृति पर बल दिया।
6. शिवाजी का योग्य नेतृत्व।

सूफी आन्दोलन

- सूफीवाद का आरंभ ईरान से हुआ। (7–8वीं शताब्दी)
- सफा शब्द का शब्दिक अर्थ = पवित्रता (ऊन का धागा)
- यह इस्लाम में सुधारवादी आंदोलन था।
- इसमें संगीत का विशेष महत्व है जिसे समां कहा जाता है।
- सूफीवाद में पीर–मुरीदी परम्परा का विशेष महत्व है।
- खानकाह = सूफी संतों के रहने का स्थान।
- मलफुजात = सूफी संतों के शिक्षाओं व जीवन की घटनाओं का संकलन।
- मकतुबात = सूफी संतों के पत्रों का संकलन।
- वलि = सूफी संत का उत्तराधिकारी।
- सिलसिला = संप्रदाय
- सिलसिला का शब्दिक अर्थ = जंजीर
- राबिया = प्रथम महिला सूफी संत।
- मंसूर बिन अल हल्लाज = स्वयं को अनलहक घोषित किया।
 - अनलहक = अहम् ब्रह्मास्मि
 - खलीफा ने इसे मृत्युदण्ड दिया।
- सूफीवाद को तसव्वुफ भी कहा जाता है।
- अल हुजवीरी = भारत में आने वाले प्रथम सूफी संत।
- केंद्र = लाहौर (मुल्तान)

सूफीवाद विचारधारा	
▪ वहदत–उल–वुजूद / तौहिद–ए–वजूदी	▪ बहदत–उल–शुहुद विचारधारा
▪ प्रतिपादक – इब्न उल अरबी	▪ प्रतिपादक – अलाउद्दीन सिम्नानी
▪ ब्रह्म व जगत में भेद नहीं	▪ ब्रह्म व जगत में अंतर
▪ उदाहरण – अकबर का तौहीद–ए–इलाही	▪ उदाहरण – नक्शबंदी संप्रदाय / सिलसिला

सूफीवाद	
बाशरा (जो शरीयत को मानते हैं।)	बेशरा (जो शरीयत को नहीं मानते हैं।)
1. चिश्ती सिलसिला 2. सुहरावर्दी सिलसिला 3. शत्तारी सिलसिला 4. फिरदौसी सिलसिला 5. कादिरी सिलसिला 6. महदवी सिलसिला 7. नक्शबंदी सिलसिला	1. सदा सुहागन (सखी संप्रदाय से प्रभावित) 2. कलन्दर 3. मलंग 4. हैदरी 5. मदारी

चिश्ती सिलसिला

- संस्थापक — अबु अब्दाल चिश्ती (चिश्त गांव के निवासी)
- 1. **ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती —**
 - गुरु — उस्मान हारुनी
 - मोहम्मद गौरी के साथ भारत आए।
- 2. **हम्मीदुद्दीन नागौरी —**
 - खानकाह — नागौर
 - यह खेती का कार्य करते थे।
 - इल्तुतमिश ने इनके सम्मान में अतारकिन के दरवाजे का निर्माण करवाया।
 - इल्तुतमिश ने इन्हें शेख उल इस्लाम की उपाधि दी लेकिन इन्होंने अस्वीकार कर दी।
- 3. **कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी —**
 - खानकाह — दिल्ली
 - कुतुबुद्दीन ऐबक ने इनके सम्मान में कुतुबमीनार का निर्माण करवाया।
- 4. **बाबा फरीद/फरीदुद्दीन —**
 - उपाधि — गंज ए शक्कर
 - यह बलवन के दामाद थे।
 - पंजाबी भाषा के प्रथम कवि।
 - इनके भजन गुरु ग्रंथ साहिब में मिलते हैं।
 - दातागंजबख्श के रूप में प्रसिद्ध।
 - पुस्तक — इसे सूफीवाद की बाइबिल कहा जाता है।
 - बाबा फरीद, कबीर, रैदास, दादू दयाल के भजनों का संकलन गुरु ग्रंथ साहिब में किया गया है।

- खानकाह — अजोधन, पंजाब (पाकिस्तान)
- मजार — पाकपाटन, पंजाब (पाकिस्तान)

5. निजामुद्दीन औलिया —

- खानकाह = दिल्ली
- यह अविवाहित थे।
- उपाधियाँ =
 - महबूब-ए-एलाही
 - सुल्तान-उल-औलिया
- इन्होंने योग को अपनाया था। इसलिए सिद्ध योगी कहा जाता था।
- यह 7 सुल्तानों के समकालीन थे।
- इमीर हसन सिज्जी ने इनकी मलफुजात लिखी।

6. बुरहानुद्दीन गरीब — प्रथम सूफी संत जो दक्षिण भारत गए एवं वहां सूफीवाद का प्रसार किया।

7. नासिरुद्दीन दहलवी — उपाधि = चिराग-ए-दहलवी/दिल्ली

8. गेसुदराज —

- तैमुर के आक्रमण के समय दक्षिण भारत चले गए एवं वहां सूफीवाद को फैलाया।
- गुलबर्गा को अपना केंद्र बनाया।
- पुस्तक — मिरात-उल-आसरीन (उर्दू)
- यह रेखा/हिन्दवी भाषा की प्रथम पुस्तक।
- उर्दू के आरंभिक स्वरूप को रेखा कहा जाता है।

9. शेख सलीम चिश्ती — खानकाह = फतेहपुर सीकरी

सुहरावर्दी सिलसिला

संस्थापक = शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी।

1. बहाउद्दीन जकारिया —

- केंद्र — मुल्तान
- यह राजनीति में हिस्सा लेते थे।
- इल्तुतमिश व कुबाचा के विवाद में इल्तुतमिश का समर्थन किया था।
- इल्तुतमिश ने इन्हें शेख उल इस्लाम की उपाधि दी।
- इनकी खानकाह में फकीरों का प्रवेश वर्जित था।
- यह शान-शौकत से रहते थे।

2. जलालुद्दीन तबरीजी —

- यह बंगाल चले गए एवं वहां सूफीवाद का प्रसार किया।

3. मोहम्मद गोस –

- शतारी सिलसिले के प्रमुख संत ।
- पुस्तकें – खालिद उल मखजीन, जवाहर ए खमशाह ।
- तानसेन के गुरु

☑ कादिरी सिलसिला –

- संस्थापक – अब्दुल कादिर जिलानी
- 1. मियां मोहम्मद मियां मीर –
 - इन्होंने हरमंदिर साहिब (गोल्डन टेम्पल) की नींव रखी ।
 - यह रामदास जी व अर्जुनदेव जी के समकालीन थे ।
- 2. मुल्ला बदख्शी – यह दारा शिकोह के गुरु थे ।

नक्शबंदी सिलसिला

- संस्थापक = बहाउद्दीन नक्शबंदी ।
- नक्शबंदी सिलसिले के लोग रहस्यमयी नक्शे बनाते थे ।
- वहदत उल शुहूद विचारधारा को मानते थे ।
- 1. ख्वाजा बकी बिल्लाह – भारत में नक्शबंदी सिलसिले के वास्तविक संस्थापक ।
- 2. अहमद सरहिन्दी –
 - इन्होंने स्वयं को मुजद्दीद ए अलिफसानी घोषित किया ।
 - मुजद्दीद ए अलिफसानी – सुधारक
 - यह अकबर की धार्मिक नीति के आलोचक थे ।
 - जहाँगीर ने इन्हें जेल में डलवा दिया ।
 - बाबर व औरंगजेब इस सिलसिले के अनुयायी थे ।

महदवी आन्दोलन

- संस्थापक = सैय्यद मोहम्मद महदवी
- केंद्र = जौनपुर
- शेख मुबारक, फैजी, अबुल फजल इस सिलसिले के अनुयायी थे ।

ऋषि आंदोलन

- शेख नूरुद्दीन
- इन्होंने कश्मीर में सुधारवादी आंदोलन चलाया था ।

सूफी आंदोलन का साहित्यिक योगदान

- सूफी संतों के लेखन, संवाद व शिक्षा से साहित्य का सृजन हुआ, जिसे सूफी साहित्य कहा जाता है।
- फारसी, हिन्दी, उर्दू व क्षेत्रीय भाषाओं में लिखा गया।

★ सूफी साहित्य के विभिन्न रूप –

निर्धारण – साहित्य की प्रकृति द्वारा।

1. मनसवी/मथनवी – विवरणात्मक कविताएँ
2. ताज की राह/तजकिराह – सूफी संतों की जीवनी।
3. मकतुबात – सूफी संतों के लिखित पत्र। (अनुयायियों, शिष्यों व अन्य सूफी संतों को।)
4. रिसालाह – विशिष्ट विषय पर लिखी गई लघु पुस्तक।
5. मालफुजात – सूफी संतों के कथन, वार्ताएँ, उपदेश, संवाद आदि का संकलन।

★ सूफी संतों द्वारा विभिन्न रचनाएँ –

1. **फवायद-उल-फुवाद** – अमीर हसन सिज्जी दहलवी।
 - यह मालफुजात का रूप है।
 - शाब्दिक अर्थ – हृदय की नैतिकता
 - इसमें निजामुद्दीन औलिया का संवाद है।
 - ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण ग्रंथ।
2. **खैर-ए-मजलिस** – नासिरुद्दीन महमूद
 - शाब्दिक अर्थ – सर्वोत्तम सभा।
 - संकलनकर्ता – हमीद कलंदर
 - यह मालफुजात है।
3. **हकीक-ए-हिन्दी** – अब्दुल वाहिद बिलग्रामी।
 - हिन्दू परम्परा के अनेक शब्द जैसे – कृष्ण, गोपी, राध, यमुना, मुरली आदि का सूफी परिप्रेक्ष्य में निवर्चन है।
4. **रुश्दनामा** – अब्दुल कुदुश गंगोही
 - इस पुस्तक पर हिन्दू धार्मिक विचारों का प्रभाव दिखाई देता है।
5. **मृगावती** – कुतुबन द्वारा हिन्दी भाषा में रचित।
6. **चन्दायन** – मुल्ला दाउद द्वारा हिन्दी में रचित। (पद्य में)
7. **पदमावत** – मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा हिन्दी भाषा में रचित।
8. **सियार उल औलिया** – मीर खुर्द किरमानी द्वारा फारसी भाषा में रचित।

भक्ति आन्दोलन

✓ वेद साहित्य	}	कर्मकाण्ड – पूर्व मीमांसा = जैमिनि
✓ ब्राह्मण साहित्य		
✓ अरण्यक साहित्य	}	ज्ञान मार्ग – उत्तर मीमांसा = बादरायण
✓ उपनिषद् साहित्य		

- भक्ति आन्दोलन का प्रारंभ दक्षिण भारत में 'पल्लव वंश' के समय हुआ।
- इसका आरंभ 'आलवार' व 'नयनार' संतों ने किया।

☑ आलवार –

- भगवान विष्णु के अनुयायी
- ये कुल 12 थे।
- आण्डाल = महिला आलवार संत।
- इसे दक्षिण भारत की मीराबाई कहा जाता है।
- कुलशेखर – यह केरल का राजा था।
- इनकी स्तुतियों का संकलन – नलयिरा दिव्य प्रबंधम्।

☑ नयनार –

- यह भगवान शिव के अनुयायी थे।
- इनकी संख्या 63 थी।
- कुछ प्रमुख संत = मणिक वाच्चगार, तिरुज्ञान, सुन्दरमिर्ति, सम्बदर।
- महिला संत = करैक्कल अम्मयार।
- नयनार संतों की स्तुतियों का संकलन = तिरुभुरई।
- तेवरम् = नयनार संतों के भजनों का संकलन।

★ बादरायण – ब्रह्मसूत्र

- ✓ शंकराचार्य = अद्वैतवाद
- ✓ रामानुजाचार्य = विशिष्ट अद्वैतवाद
- ✓ माध्वाचार्य = द्वैतवाद
- ✓ निम्बार्काचार्य = द्वैत-अद्वैतवाद
- ✓ वल्लभाचार्य = शुद्ध अद्वैतवाद

☑ **रामानुजाचार्य** – 11वीं सदी।

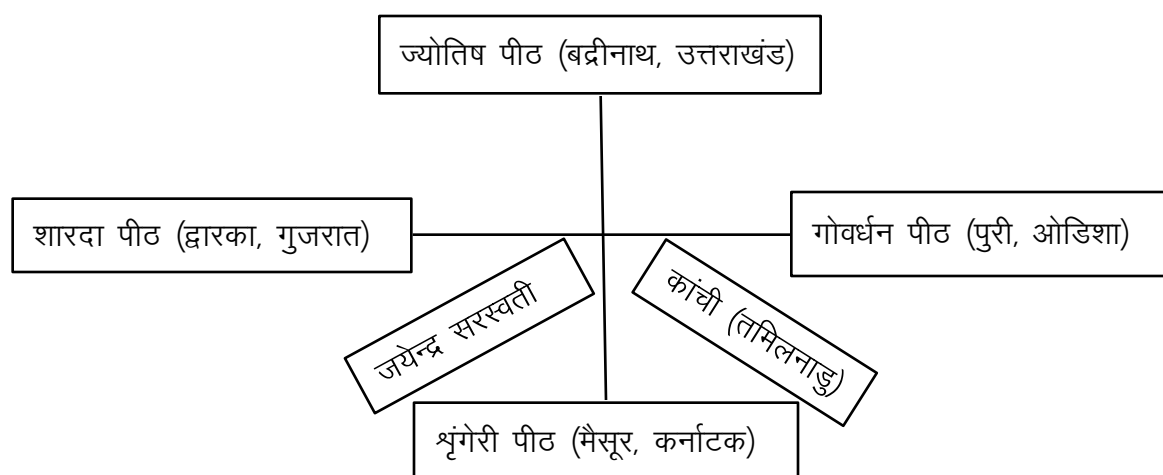
- जन्म = श्री पेराम्बदुर
- दर्शन = विशिष्ट अद्वैतवाद
- मुख्यालय = श्री रंगम्
- सम्प्रदाय = श्री सम्प्रदाय
- चोल शासक कुलोतुंग द्वितीय ने भगवान विष्णु की मूर्ति को समुद्र में फिकवा दिया था।
- रामानुजाचार्य ने इस मूर्ति को पुनः तिरुपति बालाजी में स्थापित करवाया।
- पीठ = गलताजी, जयपुर
- सगुण = ब्रह्म को माना।

☑ **माध्वाचार्य** – 13वीं सदी,

- पीठ = कर्नाटक
- सम्प्रदाय = ब्रह्म सम्प्रदाय
- दर्शन = द्वैतवाद

☑ **शंकराचार्य** – 9वीं सदी

- जन्म – कलाडि/कलादि (केरल)
- दर्शन – अद्वैतवाद
- सम्प्रदाय – स्मृति सम्प्रदाय।
- इन्होंने चार पीठों की स्थापना की।
- ब्रह्म को एक मात्र सत्य एवं निर्गुण ब्रह्म को माना।



☑ **निम्बार्काचार्य —**

- 12वीं सदी, तेलुगु
- सम्प्रदाय — सनकादिक सम्प्रदाय
- दर्शन — द्वैताद्वैतवाद
- सलेमाबाद (अजमेर) में इनकी मुख्य पीठ है।

☑ **वल्लभाचार्य —**

- 15वीं–16वीं सदी, तेलुगु
- जन्म — वाराणसी
- सम्प्रदाय — रुद्र, पुष्टिमार्ग।
- कृष्णदेवराय के समकालीन थे।
- वल्लभाचार्य के पुत्र विठ्ठलनाथ ने अष्टछाप मण्डली का गठन किया।
- यह भगवान श्री कृष्ण को बाल रूप में पूजते हैं।

☑ **रामानन्द —**

- ये रामानुजाचार्य के 5वीं पीढ़ी के शिष्य थे।
- भक्ति आन्दोलन को उत्तर भारत में लाने का श्रेय इन्हें जाता है।
- प्रथम संत जिन्होंने हिन्दी भाषा में उपदेश दिए।
- इनके प्रमुख 12 शिष्य थे।

☑ **कबीर जी —**

- यह बनारस के जुलाहा थे।
- निडर संत के रूप में प्रसिद्ध।
- हिन्दू व मुसलमान दोनों इनके अनुयायी थे।
- इन्होंने धार्मिक आडम्बरों, मूर्ति पूजा, अंधविश्वासों, अवतारवाद, वर्ण व्यवस्था, जाति व्यवस्था, सामाजिक असमानता का विरोध किया।
- ब्रह्म को निर्गुण, निर्विशेष व निराकार बनाया।
“एक कहूँ तो है नहीं, दो कहूँ तो गारी
है जैसा तैसा रहे, कहे कबीर बेचारी”
- पुस्तकें — बीजक, साखी, सबद
- सिकन्दर लोदी ने मगहर (उत्तर प्रदेश) में इनकी हत्या करवा दी।

☑ **रैदास —**

- सम्प्रदाय — रायदासी
- निर्गुण भक्ति के समर्थक
- मीरा बाई के गुरु

☑ **तुलसीदास जी –**

- सगुण भक्ति के समर्थक
- पुस्तक – रामचरितमानस
- भाषा – अवधी
- पुस्तकें – कवितावली, दोहावली, गीतावली, विनय पत्रिका।

☑ **सूरदास जी –**

- पुस्तक – सूरसागर, साहित्य लहरी, भ्रमर गीत।
- सूरदास, तुलसीदास व दादू दयाल अकबर के समकालीन थे।

☑ **चैतन्य महाप्रभु –**

- जन्म – नदिया (बंगाल)
- वास्तविक नाम – विश्वम्भर मिश्र
- इन्हें नीमाई भी कहा जाता है। (गौरांग प्रभु)
- सम्प्रदाय – गौड़ीय सम्प्रदाय
- संकीर्तन प्रथा को लोकप्रिय किया।
- दर्शन – अचिंत्य भेदाभेद
- पुस्तक – शिक्षाष्टकम्

☑ **शंकरदेव –**

- यह असम के थे।
- एकशरण सम्प्रदाय को चलाया।
- इन्होंने शरण संवत् चलाया।
- इन्हें 'असम का चैतन्य महाप्रभु' कहा जाता है।
- पुस्तक – कीर्तन घोष

☑ **महाराष्ट्र धर्म –**

- इसका आरंभ पण्ढरपुर (महाराष्ट्र) से हुआ।
- यह विठोबा (विठ्ठल-विष्णु) की पूजा करते हैं।

1. **वरकरी –**

- भगवान श्री कृष्ण के अनुयायी।
- प्रमुख संत – ज्ञानेश्वर, एकनाथ, नामदेव, तुकाराम
- शिवाजी ने संत तुकाराम जी को आर्थिक सहायता देने का प्रयास किया लेकिन उन्होंने मना कर दिया।
- ज्ञानेश्वर ने मराठी भाषा में भगवद् गीता पर ज्ञानेश्वरी नाम से टीका लिखी।

2. धरकरी –

- भगवान श्री राम अनुयायी।
- प्रमुख संत – समर्थ गुरु रामदास

☑ सिक्ख धर्म –

1. गुरु नानकदेव जी –

- जन्म – 1469 ई. (तलवण्डी – आधुनिक नाम – ननकाना साहिब)
- जन्म से खत्री (हिन्दू) थे।
- यह सामाजिक समानता के समर्थक थे।
- इन्होंने धार्मिक आडम्बरों, अंधविश्वास, अवतारवाद, कर्मकाण्ड, वर्ण व्यवस्था, जाति व्यवस्था, सामाजिक असमानता का विरोध किया।
- ब्रह्म को निर्गुण, निराकार व निर्विशेष माना।
- बगदाद, फारस, मक्का-मदीना की यात्राएँ की।
- मंदिरों व मस्जिदों में उपदेश दिए।
- हिन्दू व मुसलमानों को सच्चा हिन्दू व सच्चा मुसलमान बनने की शिक्षा दी।
- पंजाबी, संस्कृत व फारसी भाषा में उपदेश दिए।
- लंगर व्यवस्था को आरंभ किया था।

2. गुरु अंगददेव जी –

- इन्होंने गुरुमुखी लिपि की रचना की।
- गुरु ग्रंथ साहिब गुरुमुखी लिपि में लिखा गया है।
- इन्होंने लंगर व्यवस्था को नियमित किया।
- इन्होंने माल अखाड़ा आरंभ किया।

3. गुरु अमरदासजी –

- इन्होंने आनंद कारज विवाह को आरंभ किया।
- इन पर पहले भागवत धर्म का प्रभाव था।
- इन्होंने 22 गद्दियों की स्थापना की।
- सती प्रथा पर रोक लगाई।

4. गुरु रामदास जी –

- अमृतसर शहर बसाया।
- अकबर के समकालीन थे।

5. गुरु अर्जुनदेव जी –

- इन्होंने गुरु ग्रंथ साहिब का संकलन करवाया।
- इन्होंने हर मंदिर साहिब का निर्माण करवाया।
- शान-शौकत से रहना आरंभ किया।

- सिक्खों से नियमित कर लेना आरंभ किया।
 - 6. **गुरु हरगोविंद जी –**
 - इन्होंने सिंहासन पर बैठना आरंभ किया।
 - इन्होंने मीरी-पीरी परम्परा आरंभ की।
 - सैनिक संत के रूप में जाने जाते थे।
 - मांस खाने की अनुमति प्रदान की।
 - इन्होंने अकाल तख्त की स्थापना की।
 - 7. **गुरु हरराय –**
 - तेग बहादुर को बाकल दे बाबा की उपाधि दी।
 - 8. **गुरु हरकिशन –**
 - इन्होंने औरंगजेब की धार्मिक नीति की आलोचना की।
 - 9. **गुरु गोविंद सिंह –**
 - जन्म – पटना
 - आनन्दपुर साहिब को अपना केंद्र बनाया।
 - 1699 ई. खालसा पंथ की स्थापना।
 - पाहुल पद्धति प्रारंभ की।
 - पंच कंकार/कांकर का सिद्धांत दिया – केश, कंघा, कड़ा, कृपाण/कटार, कच्छ
 - इन्होंने सिंह एवं कौर लगाने का आदेश दिया।
 - पुस्तक – 10वें पादशाह का ग्रंथ।
 - जफरनामा – यह एक शिकायती पत्र था जो औरंगजेब को लिखा गया था।
 - भाषा – फारसी।
 - गुरु गोविंद सिंह ने गुरु ग्रंथ साहिब को शाश्वत गुरु घोषित किया। सिक्ख सेना ने चमकोर के युद्ध में विशाल मुगल सेना को पराजित किया।
 - नान्देड़ (महाराष्ट्र) में गुरु गोविंद सिंह की मृत्यु हो गई।
-